हिंदी साहित्य के स्नातक पाठ्यक्रम

के लिए

अधिगम परिणाम आधारित पाठ्यक्रम संरचना

(LOCF)

2019

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
बहादुर शाह जफर मार्ग
नई दिल्ली 110002

प्राक्कथन

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने देश में उच्चतर शैक्षिक प्रणाली की गुणवत्ता में सुधार के लिए कई पहल की हैं। पाठ्यक्रम में संशोधन इन पहलों में से एक प्रमुख पहल है। उच्चतर शैक्षिक प्रणाली में सकारात्मक सुधार लाने के लिए पाठ्यक्रम सुधार को योजनाबद्ध, उद्देश्यपूर्ण, प्रगतिशील और व्यवस्थित प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है। जहां तक उच्चतर शैक्षिक संस्थानों में पाठ्यक्रम का संबंध है, आज विकसित और तेजी से बदलती शैक्षिक प्रौद्योगिकी के कारण उनमें अनेक बदलाव अपेक्षित हैं। समाज के नवीनतम विकास को ध्यान में रखते हुए और समय–समय पर समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पाठ्यक्रम को बार–बार अद्यतन करने की आवश्यकता है।

26–28 जुलाई, 2018 के दौरान आयोजित कुलपतियों और उच्चतर शैक्षिक संस्थानों के निदेशकों के सम्मेलन में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अधिसूचित गुणवत्ता संबंधी अधिदेश पर विचार–विमर्श किया गया; जिसमें अन्य बातों के साथ–साथ सीखने के परिणाम आधारित पाठ्यक्रम की रूपरेखा **(LOCF)** के आधार पर पाठ्यक्रम को संशोधित करने का प्रस्ताव पारित किया गया।

सीखने के परिणाम आधारित पाठ्यक्रम रूपरेखा **(LOCF)** का उद्देश्य छात्रों को ज्ञान, कौशल, मूल्य, दृष्टिकोण, नेतृत्वतत्परता/गुणों और आजीवन सीखने में समर्थ बनाना है। परिणाम आधारित पाठ्यक्रम की रूपरेखा **(LOCF)** का मौलिक आधार यह विनिर्दिष्ट करना है कि अध्ययन के किसी विशेष कार्यक्रम को पूरा करने वाले स्नातकों से उनके अध्ययन के कार्यक्रम के अंत में क्या जानने, समझने और करने में सक्षम होना अपेक्षित है। इसके अतिरिक्त, इससे छात्र **21वीं** सदी के विभिन्न कौशलों यथा समीक्षात्मक सोच, समस्या का समाधान, विश्लेषणात्मक तर्क, संज्ञानात्मक कौशल, स्व–निर्देशित सीखने आदि में सफल होंगे। पूर्वस्नातक शिक्षा के लिए परिणाम आधारित पाठ्यक्रम की रूपरेखा **(LOCF)** पर एक नोट यूजीसी की वेबसाइट **(www.ugc.ac.in)** पर उपलब्ध है। पाठ्यक्रम संशोधन और परिणाम आधारित दृष्टिकोण को अपनाने वाले सभी विश्वविद्यालयों के लिए यह मार्गदर्शक दस्तावेज़ के रूप में कार्य करेगा।

शिक्षा के परिणाम संबंधी पाठ्यक्रम की रूपरेखा **(LOCF)** दृष्टिकोण पर आधारित पाठ्यक्रम की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने के लिए, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने मॉडल पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए विषय विशिष्ट विशेषज्ञ समिति का गठन किया था। सभी उच्चतर शैक्षिक संस्थानों को मॉडल पाठ्यक्रम प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। विश्वविद्यालय अपनी आवश्यकता के अनुसार पाठ्यक्रम में संशोधन कर सकते हैं, जो विकल्प आधारित अंक (क्रेडिट) प्रणाली **(CBCS)** और परिणाम आधारित पाठ्यक्रम की रूपरेखा **(LOCF)** की समग्र रूपरेखा के भीतर सांकेतिक मॉडल के आधार पर हो सकता है।

मॉडल पाठ्यक्रम तैयार करने संबंधी समितियों के अध्यक्ष/सदस्य/सहयोजित सदस्यों/विशेषज्ञों द्वारा किए गए प्रयासों के प्रति मैं, कृतज्ञता और सराहना व्यक्त करता हूं। मैं प्रो० भूषण पटवर्धन, उपाध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को भी धन्यवाद देता हूँ, जिन्होनें इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए मार्गदर्शन प्रदान किया। मैं प्रशासनिक सहायता प्रदान करने के लिए प्रो० रजनीश जैन, सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। इस महत्वपूर्ण कार्य के समन्वय के लिए डॉ० (श्रीमती) रेणू बत्रा, अपर सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग भी धन्यवाद की पात्र हैं।

सभी सम्मानित कुलपतियों से अनुरोध है कि वे उच्चतर शिक्षा की गुणवत्ता को और बेहतर बनाने के लिए सीखने के परिणाम पर आधारित दृष्टिकोण के आधार पर पाठ्यक्रम को विश्वविद्यालयों के सांविधिक प्राधिकारियों के परामर्श से संशोधित करने और कार्यान्वित करने के लिए आवश्यक कदम उठाएं।

(प्रो० धीरेन्द्र पाल सिंह)
अध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

नई दिल्ली
21 अक्तूबर, 2019

विषय सूची

क्रम	पृ.सं.
प्रस्तावना	4
भाग–1 1. भूमिका	6
2 पाठ योजना के लिए शिक्षण अधिगम आधारित दृष्टिकोण	8
2.1 हिंदी के स्नातक पाठ्यक्रम की प्रकृति और विस्तार 2.2हिंदी के स्नातक पाठ्यक्रम का उद्देश्य	8
3. स्नातकीय विशेषता	10
4. योग्यता निरूपक	13
5. कार्यक्रम अधिगम परिणाम	15
6. पाठ्यक्रम आधारित अधिगम परिणाम	16
7. शिक्षण प्रशिक्षण प्रक्रिया	19
भाग–2 9. स्नातक 'प्रतिष्ठा' हिंदी की संरचना	23
10. प्रस्तावित पाठ्यक्रम का नमूना	27
11. परिशिष्ट	89

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के स्नातक प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम के निर्माण हेतु गठित समिति इस रिपोर्ट को प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता का अनुभव कर रही है। इस समिति का सुझाव है किस पाठ्यक्रम को लागू करते समय और समिति द्वारा दिए गए सुझावों को अधिमान्य करते समय विश्वविद्यालयों, संस्थानों और अन्य शिक्षण संस्थाओं सहित अध्यापकों को भी इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वैश्विक संदर्भों का इसमें समायोजन हो सके।

इस पाठ्यक्रम की संरचना इस प्रकार की गई है कि इसके अध्ययन के पश्चात हिंदी साहित्य का विद्यार्थी यह जान सके कि साहित्य का विश्लेषण कैसे किया जाए, उसकी सराहना कैसे की जाए और दिए गए पाठ को पढ़ने की समझ किस प्रकार विकसित की जाए ताकि विद्यार्थी साहित्य के उद्देश्य से भली–भाँति परिचित हो सके।

यह भी उल्लेखनीय है कि चयन आधारित क्रेडिट प्रणाली में हिंदी साहित्य के पाठ्यक्रम की बड़ी भूमिका होती है। इस पाठ्यक्रम का उपयोग करने वाली संस्थाएँ और व्यक्ति पाठ चयन करते समय क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और वैश्विक संदर्भों के अनुरूप विकल्प दे सकते हैं। अधिगम परिणाम आधारित पाठ्यक्रम में जो पाठ निर्धारित किए गए हैं वे संकेत मात्र हैं। इसी प्रकार लेखकों का कालखंड, विषय–वस्तु और विधागत विभाजन भी किया गया है जिनमें उचित उद्देश्यों के अनुरूप संस्थाएँ स्वयं द्वारा चयनित पाठ भी निर्धारित कर सकती हैं।

भारत विविधताओं वाला देश है और ये विविधताएँ भाषागत भी हैं। यहाँ तक कि मानक हिंदी भाषा के अंतर्गत अनेक बोलियाँ भी सम्मिलित हैं जिनका साहित्य भी हिंदी भाषा को समृद्ध कर रहा है। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इस पाठ्यक्रम की रूपरेखा निर्मित की गई है। इसमें उल्लिखित पाठों के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी न केवल अपने विवेक को विकसित कर सकेगा बल्कि विश्लेषण करने में भी समर्थ हो सकेगा।

वर्तमान समय सूचना क्रांति का है। यह पाठ्यक्रम रोजगार परक शिक्षा देने का कार्य भी करेगा ताकि इसके अध्ययन के बाद विद्यार्थी अपने जीवन का निर्वाह भी भली–भाँति कर सके। अधिगम परिणाम आधारित शिक्षण प्रणाली में सुझाए गए पाठ्यक्रमों को यदि नवाचार की दृष्टि से लागू किया जाता है तो यह संपूर्ण समाज के लिए लाभकारी होगा।

अतः विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और अन्य संस्थाओं से यह अपेक्षा की जाती है कि वे इन पाठ्यक्रमों को लागू करने में अपनी रुचि दिखाएँ और प्रोत्साहन दें ताकि अधिगम परिणाम आधारित पाठ्यक्रम संरचना के निर्माण की सार्थकता सिद्ध हो सके।

हिंदी साहित्य में स्नातक (प्रतिष्ठा) अध्ययन

भाग–1

भूमिकाः

समाज के उपयोगितावादी दृष्टिकोण, विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में आए परिवर्तनों और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में षिक्षण में नवाचार के फलस्वरूप उच्च शिक्षा का वर्तमान परिदृश्य बदला है और इसके कारण परिणाम आधारित प्रशिक्षण पर बल देना आज की आवश्यकता बन चुकी है। विज्ञान और तकनीक की तुलना में मानविकी का क्षेत्र सर्वाधिक विचारणीय रहा है। साहित्य भी मानविकी का एक अनिवार्य अंग है। इसी परिप्रेक्ष्य में स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर हिंदी साहित्य के अध्ययन को अनुभवजन्य बनाना अत्यंत–आवश्यक है।

पाश्चात्य देशों ने समाज विज्ञान और मानविकी के प्रति संकुचित दृष्टिकोण अपनाया जिसका प्रतिफलन भारत साहित्य अन्य देशों में भी देखने को मिला किंतु भारतीय दृष्टिकोण में साहित्य और कविता का सदैव विशिष्ट स्थान रहा। इस प्रकार साहित्य और मानविकी को भारतीय संदर्भों में सदैव सम्मानजनक दृष्टि से देखा गया और साहित्य विशेष रूप में कविता ने समाज को दिशा देने का काम किया।

आज के भौतिकवादी युग में विज्ञान और तकनीक के दबाव ने संपूर्ण समाज को प्रभावित किया जिसका परिणाम यह हुआ कि भावना और जीवन में जुड़े विषय गायब होते चले गए। उपभोक्तावादी समाज ने सारा ध्यान तकनीक के विकास में लगाया क्योंकि उसे लगने लगा कि यही अंतिम सत्य है और तकनीक ही जीवन का संरक्षण कर सकेगी जबकि भावनात्मक संरक्षण के लिये साहित्य का होना अनिवार्य है। साहित्य के साथ एक अदृश्य भाव यह है कि उसका असर प्रत्यक्ष रुप से और तात्कालिक तौर पर मापा जाना संभव नहीं है। इसका असर और परिणाम दूरगामी और भविष्यलक्षी होता है। इसे गुणात्मक रूप में मापा जाना संभव है। मात्रा रुप में नहीं मशीनें भावनाओं का विकल्प नहीं हो सकती, न ही मूल्यों का पोषण उनसे संभव है। केवल साहित्य और मानविकी के माध्यम से ही मनुष्य सामाजिक बनता है। यह महत्त्वपूर्ण बात है कि आज भारतीय तकनीकी

संस्थान व अन्य वैज्ञानिक और तकनीकी संस्थान भी प्रतीकात्मक रुप से साहित्य और मानविकी को महत्व दे रहे हैं।

साहित्य का सीधा संबंध मूल्यपरक कलाओं से है और भारतीय परिवेश में शेष विश्व की तुलना में मूल्यपरकता ही सर्वोपरि रही है जिसके परिणामस्वरूप साहित्य की स्थिति सर्वाधिक महत्वपूर्ण सिद्ध हो जाती है।जब साहित्य की बात आती है तो उसके सबसे महत्वपूर्ण अवयव भाषा को अनदेखा नहीं किया जा सकता। साहित्य की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से होती है। अभिव्यक्ति ज्ञान का अभिवर्धन करती है किंतु उसके पूर्व सत् चित आनंद का भाव होना भी अनिवार्य है। उसके बिना ज्ञान का आविर्भाव नहीं हो सकता। साहित्य की यह स्थिति मनुष्य को सत्यम शिवम सुंदरम का अभिज्ञान कराती है और यही आनंदानुभव उसे समाज से जोड़ता है।

आज हम सूचना क्रांति के युग में जा पहुँचे है जहाँ सूचना का विस्फोट है किंतु सूचना को ज्ञान में बदलने का काम तकनीक नहीं कर सकती। यह कार्य तो मानविकी, समाज विज्ञान और साहित्य का है। साहित्य जीवन के प्रत्येक हिस्से का रूपायन करता है। विषेष रूप से वंचित और सुविधाहीन तथा संघर्षरत समाज को साहित्य में विशेष स्थान दिया गया है। इस प्रकार यह कहना अतिषयोक्ति न होगी कि साहित्यिक मूल्य वास्तव में वे जीवन मूल्य हैं जो सामान्य मनुष्य के लिये आवश्यक हैं।

हिंदी साहित्य का प्रारंभ भले ही एक हजार वर्ष पूर्व हुआ हो किंतु उसकी भूमिका तो उससे पूर्व ही निर्मित होने लगी थी। संस्कृत, प्रालि, प्राकृत और अपभ्रंष की पूर्व पीठिका पर अवस्थित हिंदी साहित्य ने पिछली एक शताब्दी में अपना अत्यधिक विस्तार किया। गद्य तथा पद्य सहित अन्य कथेतर विधाओं में अपनी वैष्विक उपस्थिति दर्ज कराई है। इसकी विशिष्टता के कारण ही विष्व की अन्य भाषाओं में हिंदी साहित्य की प्रतिनिधि रचनाओं का निरंतर अनुवाद हो रहा है।

वर्तमान समय की यह माँग है कि साहित्य में स्थानीयता के साथ–साथ राष्ट्रीय और वैश्विक दृष्टिकोण सम्मिलित हो और विद्यार्थियों को उसके वृहत्तर रूप से परिचित कराया जाय। चूँकि भारत विविधताओं साहित अनेक भाषा भाषी राज्यों का गणराज्य है अतः यह भी आवश्यक है कि अन्य भाषा भाषी राज्य जब हिंदी साहित्य का अध्यापन करें तो वे उसमें उस राज्य की भाषा के प्रतिनिधि साहित्य का हिंदी अनुवाद भी 15 से 20 प्रतिशत

तक सम्मिलित करने के लिये स्वतंत्र हों। इससे वहाँ के विद्यार्थियों की रुचि भी हिंदी साहित्य के अध्ययन हेतु बढ़ेगी और हिंदी भाषी राज्य भी अपनी सुविधानुसार अन्य भाषाओं के साहित्य का हिंदी अनुवाद अपने पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर सकेंगे।

हिंदी साहित्य विषय की अधिगम परिणाम आधारित पाठ्यक्रम संरचना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा उपलब्ध कराए गए मानदंडों के आधार पर निर्मित की गई है जिसमें इस बात का ध्यान रखा गया है कि चयन आधारित क्रेडिट प्रणाली की मूल भावना आहत न हो।

2. पाठ योजना के लिए शिक्षण अधिगम आधारित दृष्टिकोण

2.1 हिंदी के स्नातक पाठ्यक्रम की प्रकृति एवं विस्तार

हिंदी साहित्य और भाषा का अध्ययन वैज्ञानिकता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसका सीधा संबंध संवेदना और जीवन से है। विषय के रूप में इसे स्नातक अध्ययन के पाठ्यक्रम में आरंभ से ही न केवल सम्मिलित किया गया है बल्कि उसके विस्तार और नियोजन में विशेष रूप से मानव मूल्यों और सामाजिक यथार्थ को सम्मिलित करने का प्रयास भी किया गया है। साहित्य का सीधा संबंध समाज से होता है। साहित्यकार समाज की यथार्थ स्थिति का न केवल अवलोकन करता है बल्कि उसे भाषा के माध्यम से साहित्य में रूपायित भी करता है। भारतीय साहित्य और वाड्.मय अत्यंत प्राचीन और परंपरा की दृष्टि से परिपुष्ट है। जब हम हिंदी भाषा के साहित्य की बात करते हैं तो पाते हैं कि यों तो खड़ी बोली हिंदी का इतिहास केवल एक हजार वर्ष पुराना है किंतु इसमें और इसकी उपबोलियों में विषद् साहित्य सृजन किया गया है। आरंभ के कालखंडों में केवल पद्य साहित्य की रचना प्रमुखता से की गई किंतु आधुनिक काल में भारतेंदु बाबू के प्रयास से गद्य रचना प्रमुखता से की जाने लगी है। आज हिंदी का गद्य और पद्य दोनों विधाओं में लिखा गया साहित्य अत्यधिक लोकप्रिय है। हिंदी साहित्य और भाषा के अनेक पक्ष हैं जैसे सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक आदि।वर्तमान में लिखा जा रहा साहित्य अधिक यथार्थवादी और मानवता की संवेदना से संपृक्त है।पूर्व में जहाँ साहित्य रचना में बोलियाँ प्रमुख थीं वहीं बाद में खड़ी बोली ने यह स्थान ले लिया और आज आधुनिक हिंदी का संपूर्ण साहित्य खड़ी बोली में सृजित किया जा रहा है। जहाँ तक भाषा का प्रश्न है तो हम पाते हैं कि हिंदी भाषा सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा है और इसकी लिपि की वैज्ञानिकता

भी असंदिग्ध है। उच्चारण अवयवों की सहायता से हिंदी भाषा की वर्तनी का क्रमिक ढंग से उच्चारण किया जाता है और यह इसकी सबसे बड़ी शक्ति है। जहाँ तक वर्णमाला का प्रश्न है तो हिंदी की वर्णमाला में बावन अव्यय पाये जाते हैं जो हिंदी को अत्यंत समृद्ध करते हैं। विद्यार्थियों के ज्ञान और कौशल के विकास में स्नातक प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम गुणात्मक परिवर्तन लाने में सक्षम है।

साहित्य की प्रकृति ही ऐसी होती है वह अपने विद्यार्थी को या पाठक को न केवल जीवन के विभिन्न रसों का आस्वाद कराता है बल्कि उन्हें संपूर्ण मनुष्य बनाने में भी सहायता करता है। अध्ययन अधिगम आधारित पाठ्यक्रम संरचना की दृष्टि से स्नातकों को प्रशिक्षित करने के लिए निम्नांकित बिंदु आवश्यक हैं–

1. व्यावहारिक प्रशिक्षण
2. रोजगारपरक पाठ्यक्रम का निर्माण
3. विवेचन और विश्लेषण की क्षमता का विकास
4. संप्रेषण कौशल का विकास
5. योग और आध्यात्म का प्रशिक्षण ताकि विद्यार्थी का शारीरिक और मानसिक विकास हो सके।
6. पाठ योजना, परियोजना और शोधपरक पत्रों के निर्माण की योग्यता का विकास।
7. रिपोर्ट, आलेख, रचनाएँ, लेखन की प्रवृत्ति का विकास।
8. मीडिया के विभिन्न क्षेत्रों के लिए कौशल संबंधी पाठों का निर्माण आदि।

2.2 हिंदी के स्नातक पाठ्यक्रम का उद्देश्य

हिंदी के स्नातक प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम का उद्देश्य निम्नांकित लक्ष्यों को प्राप्त करना है–

1. विद्यार्थियों को संवेदनशील नागरिक बनाना।
2. एक कुशल वक्ता का निर्माण करना।
3. समाज और समुदाय के प्रति संवेदनशील दृष्टि का विकास करना।
4. राष्ट्रीय चेतना का विकास करना।
5. मानवीय मूल्यों के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित करना।
6. साहित्य में राष्ट्र और राष्ट्रवाद केसही अर्थों को बताना।

7. मूलभूत कौशल जैसे लेखन, श्रवण और अभिव्यक्ति का विकास करना।
8. स्थानीय से लेकर वैश्विक स्तर तक के विशिष्ट साहित्य से परिचित कराना।
9. भाषा संबंधी कौशल का विकास करना।
10. उच्चारण, वर्तनी और लिपि का सही–सही ज्ञान कराना।
11. समाज के विभिन्न समुदायों के प्रति सहिष्णुता की भावना का विकास करना।
12. विभिन्न साहित्यिक विधाओं की जानकारी देना।

3. स्नातकीय विशेषता

3.1 विषय का ज्ञान

क. साहित्य के विभिन्न रूपों, विधाओं, कालखंड और आंदोलनों की पहचान करना, उनके बारे में चर्चा करना तथा आलेख लिखने की योग्यता।

ख. विभिन्न साहित्यिक और समीक्षात्मक अवधारणाओं को समझने की योग्यता।

ग. पाठ को गंभीरतापूर्वक पढ़ने की योग्यता

घ. विभिन्न विधाओं के तथ्य, ऐतिहासिक संदर्भ को जानने की योग्यता।

ड. भाषा वैज्ञानिक और शैलीगत विविधताओं को समझने की योग्यता।

च. विभिन्न प्रायोगिक सरंचनाओं की सहायता से पाठ विश्लेषण और पाठालोचन की योग्यता।

छ. सामाजिक, धार्मिक, क्षेत्रीय, लैंगिक, राजनैतिक और आर्थिक संदर्भों में साहित्य को जानने की योग्यता।

ज. विभिन्न संदर्भों में प्रश्नाकुलता की योग्यता।

झ. साहित्य को पढ़ने के उपरांत समीक्षात्मक दृष्टि से स्थानीय और वैश्विक संदर्भों को जानने की उत्सुकता का विकास।

ट. भारतीय मानकों और संदर्भों के परिप्रेक्ष्य में साहित्य को जानने, समझने और विश्लेषण करने की योग्यता।

3.2 संप्रेषण कौशल

क. साहित्यिक, अकादमिक और बोलचाल की हिंदी को बोलने और लिखने के कौशल का विकास।

ख. पढ़ने और सुनने के कौशल पर विकास।

ग. स्पष्ट रूप से समीक्षात्मक अवधारणाओं का प्रयोग करने की योग्यता।

घ. अभिव्यक्ति के विभिन्न कौशलों का विकास।

3.3 आलोचनात्मक दृष्टिकोण

क. पढ़ने के पश्चात आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास।

ख. तुलनात्मक दृष्टि से अन्य भाषाओं के साहित्य के पुनरावलोकन का विकास।

ग. ऐतिहासिक संदर्भों में पाठ निर्धारण करने की योग्यता।

घ. साहित्य को विभिन्न कालखंडों में बाँटने की योग्यता तथा संक्रमण काल के मध्य की स्थितियों को समझने की योग्यता।

3.4 समस्याओं का समाधान

क. विश्लेषण कौशल के माध्यम से दूसरों को साहित्य से परिचित कराने की योग्यता।

ख. दूसरी भाषाओं के साहित्य की अंतर्वाही धारा को पकड़ पाने की योग्यता।

ग. अनुवाद के माध्यम से पारस्परिक संबंधों को खोज करने की योग्यता।

3.5 विश्लेषणात्मक और तार्किक दृष्टि का विकास

क. श्रेष्ठ साहित्य की विशेषता और कमजोरियों का विश्लेषण करने की योग्यता।

ख. तार्किक रूप से साहित्य के अनुशीलन की योग्यता।

ग. समीक्षा के नए बिंदुओं के अन्वेषण की योग्यता।

3.6 अनुसंधान कौशल

क. समस्याओं को खोजने की योग्यता ।

ख. शोध परिकल्पना और प्रश्नांकन की योग्यता ताकि जिज्ञासाओं का विभिन्न उत्तरों के

माध्यम से शमन किया जा सके।

ग. शोध–पत्र हेतु योजना बनाना और शोध–पत्र लिखने की योग्यता।

3.7 समूह कार्य और समय प्रबंधन

क. कक्षा में होने वाली समूह चर्चा में सकारात्मक रूप से प्रतिभाग करने की योग्यता।

ख. समूह कार्य में योगदान करने की रुचि।

ग. दिए गये समय में कार्य पूर्ण करने की योग्यता।

घ. समूह निर्माण की योग्यता।

ड. योग्यतानुसार समूह कार्य आबंटन का कौशल।

3.8 वैचारिक स्पष्टता

क. अध्ययन के उपरांत साहित्य के संबंध में वैचारिक दृष्टि का विकास।

ख. दूसरे विचारों का साहित्य पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन।

ग. स्थानीय से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर तक की वैचारिकी से परिचय।

3.9 स्वाध्याय के प्रति विशेष रुचि का विकास

क. साहित्यिक और समीक्षात्मक कृतियाँ पढ़ते समय स्वाध्याय की भावना का विकास।

ख. व्यक्तिगत शोध के साथ–साथ प्रश्न निर्माण और उत्तर देने की योग्यता का विकास।

ग. दूसरों को स्वाध्याय हेतु प्रेरित करने की योग्यता का विकास।

3.10 डिजिटल साक्षरता

क. सूचना एवं तकनीकी कौशल से परिचय ।

ख. तकनीकी उपकरणों का विधिवत उपयोग करने की योग्यता का विकास।

3.11 बहुसांस्कृतिकता

क. विभिन्न भाषाओं (भारतीय एवं विदेशी) के साहित्य के अध्ययन के द्वारा सांस्कृतिक बहुलता को जानने के प्रति रुचि।

ख. विभिन्न विविधताओं को स्वीकार करने की क्षमता का विकास।

ग. बहुसांस्कृतिकता को आत्मसात करने की योग्यता।

3.12 नैतिक और सामाजिक मूल्य

क. सामाजिक मूल्यों को स्पष्ट रूप से समझने के कौशल का विकास।

ख. नैतिक मूल्य के प्रति जागरुकता और उनके प्रचार–प्रसार के लिये रुचि उत्पन्न होने की संभावना का विकास।

ग. साहित्य के माध्यम से विभिन्न सामाजिक समस्याओं/संदर्भों जैसे– पर्यावरण, धर्म, राजनीति, समाज आदि को जानने–समझने की जिज्ञासा का विकास।

3.13 जीवनपर्यंत प्रशिक्षण

क. साहित्य के अध्ययन के माध्यम से स्थायित्वबोध का विकास।

ख. व्यक्तिगत और समष्टिगत दृष्टिकोण का समायोजन करते हुए नए मूल्यों की स्थापना।

ग. ऐसी साहित्यिक रचनाओं का अध्ययन जो चिरकालिक और स्थानीय से लेकर वैश्विक महत्व की हैं।

4. हिंदी प्रतिष्ठा में स्नातक उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए योग्यता निरूपक।

हिंदी प्रतिष्ठा में स्नातक उपाधि प्राप्त करने हेतु योग्यता निरूपक बिंदुओं में मुख्य रूप से शिक्षण के पाँच तत्व नियामक होंगे। ये हैं–

1. साहित्य और भाषा की समझ
2. उनका अनुप्रयोग
3. सम्प्रेषण
4. विस्तार
5. विषय के ज्ञान के आधार पर उसका समग्र विश्लेषण

इन तत्वों में विद्यार्थियों की जागरुकता का वह हिस्सा भी सम्मिलित होगा जिसके तहत वर्ग, लिंग, जाति, समुदाय और धर्म आदि शामिल रहते हैं ताकि इन सब के वैविध्य से विद्यार्थी परिचित हो सकें और पारदर्शिता के साथ इनके उद्देश्यों का चिंतन का ज्ञान प्राप्त कर सकें। इस तरह यह कहा जा सकता है कि हिंदी प्रतिष्ठा के पाठ्यक्रम के नियामक बिंदुओं में सम्प्रेषण, विश्लेषण और तार्किकता का स्पष्ट और मुख्य स्थान रहे।

हिंदी में उपाधि प्राप्त करने वाले प्रत्येक स्नातक में निम्नांकित योग्यताओं का विकास होना आवश्यक हैं–

1. इस अध्ययन के बाद हिंदी साहित्य के संबंध में उसे व्यवस्थित ज्ञान प्राप्त हो सके ताकि वह उसे उचित ढ़ंग से दूसरों को हस्तांतरित कर सके।
2. विद्यार्थी को भारत में हिंदी के विकास की पूर्ण जानकारी हो सके। इसमें साहित्य की विभिन्न विधाओं, उनके उपरूपों, कालखंड, आंदोलनों और लेखन की पारंपरिक तथा आधुनिक पद्धतियों की पहचान भी सम्मिलित होनी चाहिए ताकि वह इन्हें श्रेणीबद्ध करते हुए आलोचनात्मक ढग से इसे ग्रहण कर सके।
3. बदलते हुए वैश्विक परिदृश्य में साहित्य की भूमिका को समझ सके और उसे दैनन्दिन और व्यावसायिक संदर्भों से जोड़कर उसे अभिव्यक्त कर सके। विषय के ज्ञान के संबंध में बात करते समय जब हम यह चर्चा करते हैं कि विद्यार्थी को साहित्य का पाठ करना आवश्यक होता है ताकि वह परंपराओं, संदर्भों, अंतर्वस्तु, शिल्प और उसके मूल्यों को जान सके ऐसे में इस महत्वूपर्ण की कुंजी इसमें निहित है कि वे जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र, वर्ग, राजनीति आदि के बारे में स्थानीय से लेकर वैश्विक स्तर पर एक विशेष दृष्टि का विकास कर सकें।
4. हिंदी साहित्य और उसके अनुवाद के अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थी में स्पष्टतः लेखन कौशल का विकास भी होना चाहिए।
5. विद्यार्थी में विवेचना शक्ति का पर्याप्त विकास हो सके, यह भी आवश्यक है।
6. विद्यार्थी विभिन्न जीवन मूल्यों और साहित्यिक मूल्यों दोनों के संदर्भ में अपने विचार और सुझाव दे सके ताकि कक्षा से लेकर समाज के बीच उसके ज्ञान का पर्याप्त प्रदर्शन हो सके।
7. विद्यार्थी को प्रयोजनमूलक हिंदी का ज्ञान भी हो सके ताकि वह जीवन के विभिन्न मंचों यथा– कक्षा, कार्यालय, जनसंचार और तकनीकी से जुड़े मंचों पर विभिन्न रूपों में अपनी अभिव्यक्ति दे सके। ये रूप रिपोर्ट, परियोजना, सूचना, आलेख अथवा समाचार आदि हो सकते हैं।
8. रोजगार के क्षेत्र में हिंदी साहित्य और भाषा का क्या महत्व है इसकी पहचान कर सके। वह अध्यापन, प्रकाशन, अनुवाद, संप्रेषण, जनसंचार, राजभाषा, लेखन आदि कोई भी क्षेत्र हो सकता है।

9. साहित्य के माध्यम से मूल्यों का संप्रेषण समाज में करने की योग्यता भी विद्यार्थी में विकसित होनी चाहिए ताकि वह भारतीय परंपराओं और आदर्शों को भविष्य में अपने साथियों अथवा विद्यार्थियों के बीच प्रसारित प्रचारित कर सके।

यह पाठ्यक्रम विभिन्न स्तरों पर विद्यार्थियों की योग्यता का उन्नयन करने में सहायक हो सकेगा साथ ही साथ यह सामाजिक जटिलताओं को साहित्य के माध्यम से समझाने में भी निर्धारक के रूप में काम करेगा। साहित्य के साथ–साथ भाषा की समझ भी विद्यार्थियों में विकसित होगी जिसकी सहायता से विद्यार्थी चिंतन, विश्लेषण और मूल्यांकन से संबंधित आधार बिंदुओं को जान सकेंगे। उनकी रोजगार पाने की योग्यता तो विकसित होगी ही, वे विभिन्न संदर्भों को भी जान सकेंगे जो कि धारणीय विकास और समाधान में सहायक होगें। एक उत्तम भारतीय नागरिक होने के लिए आवश्यक है कि लोक से लेकर शास्त्र तक का साहित्यिक ज्ञान व्यक्ति को हो, तभी वह एक उत्तम विश्व नागरिक भी बन सकेगा और समाज के प्रति अपनी उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते हुए ऋणमुक्त हो सकेगा।

5. कार्यक्रम अधिगम परिणाम

स्नातक हिंदी (प्रतिष्ठा) कार्यक्रम से संबद्ध अधिगम परिणाम इस प्रकार है–

1. साहित्य संप्रेषण के आधार बिंदुओं की जानकारी देना ताकि साहित्य के संबंध में एक स्पष्ट समझ विकसित हो सके।
2. हिंदी साहित्य और भाषा का व्यवस्थित और तर्कसंगत ज्ञान कराना ताकि उसके सैद्धांतिक पक्ष और साहित्यिक विकास के संबंध में पर्याप्त जानकारी मिल सके।
3. साहित्य की विभिन्न विधाओं को पढ़ने और समझने की योग्यता का विकास करना।
4. साहित्य लेखन की विविध शैली और समीक्षात्मक दृष्टि का विकास करना।
5. स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक सांस्कृतिकता के वृहद संजाल के बारे में जानकारी देना ताकि विद्यार्थी में साहित्यिक मूल्यांकन की योग्यता विकसित हो सके।
6. समीच्य दृष्टि और व्यवस्थित वैचारिकी का प्रदर्शन करना जिससे कि हिंदी साहित्य के अध्ययन के प्रति जिज्ञासा और प्रश्न उत्पन्न हो सके।
7. आधुनिक संदर्भों में तकनीकी संसाधनों को इस्तेमाल करते हुए हिंदी साहित्य की जानकारी देना।

8. प्रत्येक स्तर पर जीवन मूल्यों और साहित्यिक मूल्यों का निर्धारण करने की क्षमता और ज्ञान का विकास करना।
9. विद्यार्थी में लेखन, वाचन और श्रवण के साथ–साथ कल्पनाशक्ति का विकास करना जिससे कि उसके समग्र व्यक्तित्व में निखार आ सके।
10. साहित्य के अध्ययन के बाद रोजगार के विभिन्न क्षेत्रों की पहचान करते हुए रोजगार के नए मार्ग तलाशना।
11. वर्तमान युग सूचना क्रांति का युग है जिसमें अभिव्यक्ति की प्रधानता है ऐसे में तकनीकी के विकास ने साहित्य संचरण को अत्यंत सुगम बना दिया है इसी के परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य लेखन और अनुवाद का मंच प्रदान करना जिसका उपयोग कर जनसंचार से लेकर व्यक्तित्व विकास तक में विद्यार्थी निष्णात हो सके। विद्यार्थी की रुचियों को एक व्यवस्थित रूप देना और उन्हें विभिन्न विधाओं में से चयन की स्वतंत्रता प्रदान करना ताकि वे स्नातक कार्यक्रम के पूर्ण होने के बाद खुद ही साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में से अपनी रुचि के अनुसार चयन कर सकें।
12. भारत के साहित्यिक, सांस्कृतिक और भाषाई विविधता को जानने के प्रति जागरुकता पैदा करना भी हिंदी साहित्य के अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य है।

6. षिक्षण अधिगम पद्धति

सीखने की प्रक्रिया न केवल चुनौतीपूर्ण होती है बल्कि इसमें अनेक तत्व समाहित रहते हैं। सीखने के दौरान विद्यार्थी मनोरंजन भी प्राप्त करता है, स्वयं उसमें संलग्न भी होता है और सुझाव भी देता है। इसीलिए विद्यार्थियों को अध्यापन के दौरान हमेशा इस बात के लिए प्रेरित करना चाहिए कि वे विषय केंद्रित रहते हुए स्वयं भी अन्वेषण की प्रक्रिया से गुजरें ताकि उसमें संलग्न भी रहे और उन्हें कुछ नया भी प्राप्त हो सके। विद्यार्थी को इस बात के लिए भी प्रेरित करना चाहिए कि वे प्रतिदिन पाठ्यक्रम के किसी एक हिस्से को केंद्र में रखे। उसकी आधारभूत संरचना को जानने का प्रयास करे और यह भी समझने का प्रयास करे कि उस हिस्से का उसके जीवन से लेकर समाज तक की क्या उपयोगिता है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में निर्णय आधारित दृष्टिकोण के बजाय प्रायोगिक प्रक्रिया पर आधारित दृष्टिकोण पर बल दिया जाना चाहिए। यही एक उत्तम मार्ग है।

अध्यापकों को अनुपातिक ढ़ंग से 20:30:50 की पद्धति का व्यवहार करना चाहिए। इसमें व्याख्यान का हिस्सा 20 प्रतिशत हो, दृश्य का हिस्सा 30 प्रतिशत और अनुभवजन्य चीजें 50 प्रतिशत रहे। इस अनुपात को तात्कालिक आवश्यकताओं के संदर्भ में बदला भी जा सकता है। संस्थाएँ या विश्वविद्यालय ज्ञान संप्रेषण के विभिन्न माध्यम का उपयोग करते हुए प्रक्रिया आधारित अधिगम और समग्र विकास को केंद्र में रखकर उद्देश्यों की प्राप्ति कर सकते हैं। ये माध्यम निम्न प्रकार से हो सकते हैं–

6.1 व्याख्यान

संबद्ध विषय पर आधारित व्याख्यान ऐसे हों जो न केवल विद्यार्थी की रुचि जागरुक करे बल्कि उन्हें इस बात की भी प्रेरणा दे कि वे संबद्ध विषय के बारे में वे स्वयं भी अन्य सामग्री का संचयन करें और उसका अध्ययन करें। व्याख्यान द्विपक्षीय होने चाहिए न कि एकांगी। इससे विद्यार्थी स्वयं भी व्याख्यान में हिस्सा ले सकेगा और अपने विचार या जिज्ञासा भी प्रगट कर सकेगा। इस प्रकार उसकी अंतर्दृष्टि विकसित होगी और वह कुछ सोचने के लिए भी तत्पर होगा।

6.2 संवाद तथा बहस

कक्षाध्यापन में अध्यापक को संवाद को बढ़ावा देना चाहिए ताकि विद्यार्थी विद्यार्थी के बीच, विद्यार्थी अध्यापक के बीच अथवा समूह रूप में विचार विनिमय और संवाद स्थापित हो सके और विद्यार्थियों की विश्लेषण, विवेचन की योग्यता का विकास हो। यदि इस प्रकार का कौशल विद्यार्थियों में विकसित होता है तो वह जीवन के किसी भी क्षेत्र में स्वयं को अभिव्यक्त करने में सफल हो सकेगा।

6.3 परिवेश का सृजन

अध्यापक को कक्षाध्यापन के दौरान पढ़ाये जा रहे पाठ से संबद्ध परिवेश का सृजन करने का प्रयास करना चाहिए। यह संवाद वाचन, अभिनय या सामान्य पाठ वाचन द्वारा भी संभव होता है। इसे स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संदर्भों का भी ज्ञान कराना चाहिए ताकि तुलनात्मक दृष्टि का विकास हो सके।

6.4 समकालीन साहित्य का ज्ञान

अध्यापक को कक्षाध्यापन के दौरान समकालीन साहित्य का ज्ञान भी देना चाहिए। यह विश्लेषण और विवेचन की योग्यता को विकसित कर पायेगा।

6.5 अभिनय पद्धति का प्रयोग

कक्षाध्यापन के दौरान अध्यापक अभिनय पद्धति के माध्यम से भी अध्यापन कर सकता है। इससे विद्यार्थियों की रुचि भी जागृत होती है और वे स्वयं उसमें भाग लेकर उससे जुड़ भी सकते हैं। कविताओं के संदर्भ में उनका पाठ या गायन भी करवाया जा सकता है। एकांकी या बड़े नाटकों के अध्यापन के साथ–साथ उनका पूर्णकालिक मंचन भी हो सकता है। कहानियों के अध्यापन में उनका नाट्य रूपांतरण करवाया जा सकता है। इस प्रकार न केवल सामूहिक रूप से कार्य करने की स्थिति निर्मित होगी बल्कि विद्यार्थियों में परस्पर की भावना का विकास भी हो सकेगा।

6.6 अध्ययन से संबंधित पर्यटन

साहित्य के अध्ययन से संबंधित पर्यटन भी कराया जा सकता है। यदि पाठ्यक्रम में सम्मिलित साहित्यकारों में कुछ उसी नगर या आसपास के हैं तो उनके जन्मस्थान अथवा उनसे जुड़ी जगहों का पर्यटन किया जा सकता है। यदि कतिपय लेखक जीवित हैं तो उन्हें बुलाकर अथवा उनके पास जाकर उनके साहित्य के साथ–साथ साहित्य के अन्य अवयवों की चर्चा भी की जा सकती है।

6.7 क्षेत्रीय अथवा परियोजना कार्य

सुनने में भले ही थोड़ा यह बड़ा अजीब लगे किंतु यह आवश्यक है कि कक्षाध्यापन में भी इस पद्धति को अपनाया जाना चाहिए। विद्यार्थी स्वयं विविध विधाओं में लिख सकते हैं अथवा संबंधित क्षेत्र का भ्रमण कर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। उदाहरण के लिये 'उसने कहा था' कहानी में अमृतसर का जिक्र है और वहाँ के परिवेश की चर्चा की गई है। यदि कोई विद्यार्थी अमृतसर जाता है तो उसे यह कहानी समझने में आसानी होगी। इसीप्रकार यदि किसी साहित्य में बनारस जैसे शहर का जिक्र है तो विद्यार्थियों को वहाँ अवश्य जाना चाहिए। ताकि संबंधित स्थानों के संबंध में सीधे–सीधे उसे जानकारी मिल सके।

6.8 तकनीकी का सहयोग

वर्तमान समय में तकनीकी में अनेक अनुपलब्ध चीजों को सुगम बना दिया है। आज यदि हमें दिवंगत साहित्यकारों को सुनने की या देखने की जिज्ञासा है तो वह सहज रूप में पूर्ण हो सकती है। जैसे यदि कोई विद्यार्थी किसी बड़े रचनाकार का रचनापाठ उसके मुँह से सुनना चाहता है तो आश्चर्य नहीं कि वह इंटरनेट के माध्यम से उसे सुन सके। इसी प्रकार वह तमाम अनुपलब्ध और दुर्लभ सामग्री को भी सर्च इंजन के माध्यम से खोज सकता है।

इसके अतिरिक्त अध्यापक अन्य नवाचारी पद्धतियों अथवा माध्यमों का उपयोग अपनी कक्षा में कर सकता है जो एक सराहनीय कदम होगा। मीडिया संबंधी पाठ्यक्रम में किसी मीडिया संस्थान में विज़िट कराना उचित होगा।

7. मूल्यांकन पद्धति

7.1 कार्यक्रम अधिगम परिणाम और पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम का संतुलन

स्नातक हिंदी साहित्य (प्रतिष्ठा) के विद्यार्थियों की उपलब्धियों का मूल्यांकन निम्न प्रकार से किया जायेगा।

1. कार्यक्रम अधिगम परिणाम (स्नातक निरूपक)

2. पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम (गुणवत्ता निरूपक)

3. एलओसीएफ द्वारा दिये गये सुझावों (कतिपय चयिनत पाठ्यक्रमों के अधिगम परिणामों के संदर्भ में) में स्नातक अधिगम नियामक के तहत अकादमिक और व्यावसायिक कौशलों को दर्शाया गया है।

7.2 मूल्यांकन की प्राथमिकताएँ

संस्थाओं से यह अपेक्षा होनी चाहिए कि वे अंतिम परीक्षा के आधार पर मूल्यांकन करने के बजाय निर्धारित मूल्यांकन पद्धतियों में प्राथमिकताएँ तय करें अर्थात् सेमेस्टर के अनुसार परीक्षा परिणाम तैयार किए जाएँ न कि वार्षिक परीक्षा के आधार पर। सेमेस्टर

परीक्षा के अंतर्गत आंतरिक मूल्यांकन, सतत मूल्यांकन और सम सत्र (मउमेजमत) के अंत में ली जाने वाली परीक्षाा सम्मिलित हो। आंतरिक मूल्यांकन में कक्षा में आयोजित की जाने वाली मासिक परीक्षा, परियोजना कार्य आदि के अंक भी सम्मिलित रहने चाहिए। इस प्रकार प्रशिक्षु या विद्यार्थी के मूल्यांकन की सतत प्रगति से अवगत हुआ जा सकता है।

कक्षा के दौरान ली जाने वाली आकस्मिक परीक्षा में पुस्तक सहित और पुस्तक रहित परीक्षा जो एक घंटे अथवा दो घंटे की भी हो सकती है ली जानी चाहिए। इसी प्रकार परियोजना कार्य आस पास परिवेश, सामाजिक समस्याओं और उनके समाधान आदि पर आधारित हो।

रचनात्मक लेखन को भी परियोजना का विषय बनाया जा सकता है। परियोजना कार्य एकल रूप में अथवा समूह बनाकर भी लिया जा सकता है। इसी प्रकार समस्यापूर्ति दी जा सकती है। त्वरित आलेख भी सम्मिलित किया जा सकता है। यह त्वरित आलेख शब्द सीमा में भी बंधा हो सकता है और पृष्ठ सीमा में भी। मौखिक प्रस्तुतियाँ, संगोष्ठी आदि में प्रतिभागिता, साक्षात्कार, लघु उत्तरीय प्रश्न और तकनीकी ज्ञान के परीक्षण के आधार पर भी मूल्यांकन किया जाना चाहिए। इस प्रकार विद्यार्थी का समग्र मूल्यांकन हो सकेगा।

7.3 अधिगम परिणाम तालिका

मूल्यांकन पद्धति में अंक विभाजन करते समय संस्थाओं को स्पष्ट रूप से यह उल्लेख करना चाहिए कि किस कार्य हेतु कितनी क्रेडिट्स दी जा रही हैं और उनका विभाजन करते समय प्रत्येक प्रश्नपत्र के लिए अधिभार तय किये जाने चाहिए। निम्नांकित तालिका के माध्यम से अधिगम परिणाम अंकपत्र को समझने में आसानी होगी। (तालिका अंत में दी गई है।)

7.4 अधिभार निर्धारण

कोई भी संस्था अधिभार निर्धारण करते समय पूर्व सम सत्र (1st, 3rd, 5th Semeester) और उत्तर समसत्र (2nd, 4th, 6th Semester) में 60:40 के अनुपात में अंकों का निर्धारण कर सकती है। यह निर्धारण अलग अलग हो सकता है। उदाहरण के लिए 60 प्रतिशत को 20+10+10+15+05 में बांटा जा सकता है। इसके अंतर्गत विभिन्न गतिविधियाँ शामिल हो सकती हैं जैसे 20 प्रतिशत लिखित कक्षा परीक्षा के लिए, 10

प्रतिशत व्यक्तिगत परियोजना कार्य के लिए, 10 प्रतिशत समूह परियोजना कार्य के लिए, 15 प्रतिशत उपस्थिति व अन्य प्रकार के व्यवहार के लिए और 05 प्रतिशत मौखिक प्रस्तुति के लिए हो सकते हैं।

इसी प्रकार 40 प्रतिशत अंक सत्र के अंत में दी जाने वाली परीक्षा के लिए निर्धारित किए जा सकते हैं। उक्त प्रश्नपत्र में तीन तरह के प्रश्न होने चाहिए। 1. बहुविकल्पीय, 2. लघु उत्तरीय, 3. दीर्घ उत्तरीय। इसे सुविधानुसार 10+15+15 में विभाजित किया जा सकता है। अध्यापक प्रश्नों का निर्धारण इस प्रकार करे कि उस सम सत्र में पढ़ाया जाने वाला संपूर्ण पाठ्यक्रम उसमें समाहित रहे।

7.5 नवाचार और लचीलापन

अध्यापकों को सदैव नवाचार करने और लचीलापन अपनाने के लिए भी प्रेरित करना चाहिए ताकि इस प्रपत्र में अधिगम परिणाम से संबद्ध और रेखांकित किए गए बिंदुओं का सही अर्थों में उपयोग किया जा सके। मूल्यांकन से संबंधित सारे बिंदु स्पष्ट रूप से सभी उपयोगकर्ताओं को संप्रेषित किए जाने चाहिए। यदि इसमें किसी प्रकार का संशोधन अथवा परिवर्धन किया जाता है तो उसकी भी यथासमय सूचना देने की व्यवस्था की जानी चाहिए।

7.6 स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व

स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व प्रत्येक उपयोगकर्ता के लिए अत्यन्त आवश्यक है। वास्तव में यह अधिगम परिणाम आधारित पाठ्यक्रम संरचना की कुंजी है जो इसकी सफलता का निर्धारक तत्व भी है। उदाहरण के लिए शोध कार्य में शोधार्थी को अधिक से अधिक पुस्तकालय का उपयोग करने, साहित्य का सर्वेक्षण करने मौलिक आधारों को जानने, तार्किक और सृजनात्मक योग्यता का विकास करने आदि के लिए प्रेरित करना चाहिए। यहाँ भी प्रत्येक गतिविधि के लिए अंक निर्धारण किए जा सकते हैं। किसी भी संस्था की उत्कृष्टता इस बात पर निर्भर करती है कि वे पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात किस प्रकार का परिणाम प्राप्त कर पा रहे हैं। यह भी कि वे अपने लक्ष्यों की पूर्ति में कितने सफल हैं। इस दृष्टि से नवाचार का होना अत्यंत आवश्यक है। इससे अध्ययन में और अध्यापन में पारदर्शिता बनी रहती है।

7.7 गतिविधियों का समूहन और समायोजन

विभिन्न गतिविधियों के कुछ समूह बनाये जा सकते हैं और उन्हें समायोजित करते हुए उनके लिए अधिभार तय किया जा सकता है। ऐसा करते समय इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि प्रशिक्षण अधिगम परिणाम आधारित पाठ्यक्रम संरचना के उद्देश्यों की पूर्ति हो सके। इस हेतु संस्थाएँ कुछ समूहों अथवा सभी समूहों का चयन कर सकती हैं ताकि विद्यार्थी का समूचित विकास हो। इन पद्धतियों में खुला साक्षात्कार, समूह चर्चा, एकल अथवा समूह प्रश्न सत्र, कक्षा प्रस्तुति, पुस्तकालय अथवा क्षेत्र विशेष का भ्रमण, टर्म पेपर, पोस्टर प्रस्तुतिकरण आदि सम्मिलित हो सकते हैं। प्रत्येक क्रेडिट के लिए कुछ घंटे भी निर्धारित किए जा सकते हैं।

7.8 पुनर्परीक्षण और संशोधन

प्रत्येक संस्था के लिए यह आवश्यक है कि वह पाठ्यक्रम का एक अंतराल के बाद पुनर्परीक्षण करे और यदि आवश्यक हो तो उसमें संशोधन भी करे। यह भी आवश्यक है कि संस्थाएँ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्धारित चयन आधारित क्रेडिट प्रणाली के दिशा निर्देशों के आलोक में इस अधिगम परिणाम आधारित पाठ्यक्रम को लागू करने हेतु अपने नियमों, परिनियमों और अधिनियमों में आवश्यक संशोधन और संयोजन करे ताकि इसमें दिये गए सुझावों को लागू किया जा सके।

7.9 एलओसीएफ की मूल भावना

यहाँ दिये गए अधिगम परिणाम आधारित पाठ्यक्रम संरचना के दिशा निर्देश सुझाव की तरह हैं। अतः संस्थानों से अपेक्षा की जाती है कि वे इनके परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन पद्धतियों का निर्धारण तात्कालिक परिस्थितियों और संदर्भों के आलोक में इस प्रकार करें कि एलओसीएफ की मूल भावना बनी रहे। हिंदी साहित्य से संबंधित अधिगम परिणाम आधारित पाठ्यक्रम संरचना का मूल उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी का क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और वैश्विक संदर्भों में सही मूल्यांकन किया जा सके ताकि उसका पारदर्शी और सही ढंग से परीक्षण हो सके।

भाग 2

2.1 हिंदी के स्नातक प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम की संरचना

टिप्पणी : हिंदी के स्नातक प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम की संरचना हेतु समिति ने CBCS के प्रपत्र में उल्लिखित क्रेडिट का पालन किया है जो प्रति पाठ्यक्रम 6 क्रेडिट निर्धारित है।

A. तीन वर्षीय स्नातक(प्रतिष्ठा)पाठ्यक्रम 14 प्रष्नपत्र (14x6= 84 क्रेडिट)

B. विषय केंद्रित निम्नांकित प्रश्न पत्रों में से कोई चार प्रष्नपत्र (4x6= 24 क्रेडिट)

C. हिंदी सामान्य (generic) आत्मिक पाठ्यक्रम (HGEC) 4 papers (4x6= 24 क्रेडिट)

(यह पाठ्यक्रम हिंदी ऑनर्स के अतिरिक्त अन्य ऑनर्स के विद्यार्थियोंके लिए निर्धारित है)

D. हिंदी कौशल –संवर्धन ऐच्छिक पाठयक्रम (HSEC)

(क और ख वर्ग में से किन्हीं दो का चयन)

क - 2 प्रष्नपत्र (2x4=8 क्रेडिट)
ख- 2 प्रष्नपत्र (2x4=8 क्रेडिट)

कुल योग (A+B+C+D): 148 (84+24+24+8+8) क्रेडिट

A. तीन वर्षीय स्नातक (प्रतिष्ठा) पाठ्यक्रम 14 प्रष्नपत्र

क्रम सं.	**पाठ्यक्रम का शीर्षक**	**क्रेडिट: 6 क्रेडिट प्रत्येक कुल 84 क्रेडिट (क्रेडिट विभाजन UGC/CBCS के आधार पर संस्थाओं के द्वारा किया जाएगा).** [टिप्पणी : **जहॉ कुछ पाठ्यक्रमों मेंव्याख्यान (5) ट्यूटोरियल (2) अन्य**(0) आवष्यक है तो कुछ अन्य**पाठ्यक्रमों मेंव्याख्यान (4) ट्यूटोरियल (1) अन्य** (1) आवष्यक है	**क्रेडिट के घंटों का विभाजन व्याख्यान, 4 /[5]/[4] ट्यूटोरियल,1/[1]/(0) अन्य 1 /[0]/[2]2 [टिप्पणी : षिक्षण और मूल्यांकन के अधिभार के आधार पर विभिन्न विकल्प निर्भर हो सकते हैं]**
1.	प्रष्न पत्र–1.हिंदी साहित्यः आदिकाल	6	

	से पूर्व मध्यकाल–रचनाएँ व इतिहास		
2	प्रष्न पत्र–2. हिंदी साहित्यः उत्तर मध्यकाल– रचनाएँ व इतिहास	6	
3	हिंदी साहित्य : भारतेंदु युग से छायावादी कविता तक – रचनाएँ व इतिहास	6	
4	हिंदी साहित्य : प्रगतिवाद से 20 वीं शताब्दी तक–रचनाएँ व इतिहास	6	
5	कथा साहित्य : कहानी व उपन्यास	6	
6	हिंदी नाट्य साहित्य	6	
7.	कथेतर गद्य साहित्य	6	
8.	हिंदी गद्य साहित्य का इतिहास	6	
9	हिंदी आलोचना	6	
10.	हिंदी भाषा और भाषा विज्ञान	6	
11.	भारतीय काव्यशास्त्र	6	
12.	पाश्चात्य काव्यशास्त्र	6	
13.	मीडिया के विविध आयाम	6	
14.	प्रयोजनमूलक हिंदी	6	
B. विषय केंद्रित निम्नांकित प्रश्न पत्रों में से कोई चार प्रश्नपत्र (4x6= 24 क्रेडिट)			
	पाठ्यक्रम का शीर्षक	**क्रेडिट: 6 क्रेडिट प्रत्येक कुल 24 क्रेडिट**(4x6) **(क्रेडिट विभाजन UGC/CBCS के आधार पर संस्थाओं के द्वारा किया**	**क्रेडिट के घंटों का विभाजन व्याख्यान, 4 /[5]/[4] ट्यूटोरियल,1/[1]/(0) अन्य 1 /[0]/[2]2 [टिप्पणी : शिक्षण और मूल्यांकन के**

		जाएगा). [टिप्पणी : **जहॉ कुछ पाठ्यक्रमों मेंव्याख्यान (5) ट्यूटोरियल (2) अन्य**(0) आवष्यक है तो कुछ अन्य**पाठ्यक्रमों मेंव्याख्यान (4) ट्यूटोरियल (1) अन्य(1)** आवष्यक है	**अधिभार के आधार पर विभिन्न विकल्प निर्भर हो सकते हैं]**
1	लोक साहित्य	6	
2	प्रवासी साहित्य	6	
3	भारतीय साहित्य	6	
4	स्थानीय भाषा के साहित्य का देवनागरी लिपि में अध्ययन	6	
5	हिंदी में अनूदित विश्व साहित्य (अल्बेयर कामू, चेख़व, शेक्सपियर, विलियम वर्डस्वर्थ)	6	
6	बाल साहित्य	6	
7	राष्ट्रीय चेतना की कविता	6	
8	सृजनात्मक लेखन	6	
9	राजभाषा हिंदी	6	
C. हिंदी सामान्य (generic) **आत्मिक पाठ्यक्रम** (HGEC) **कोई चार** **(यह पाठ्यक्रम हिंदी ऑनर्स के अतिरिक्त अन्य ऑनर्स के विद्यार्थियोंके लिए निर्धारित है)**			
	पाठ्यक्रम का शीर्षक	**क्रेडिट: 6 क्रेडिट प्रत्येक कुल 24 क्रेडिट**(4x6) **(क्रेडिट विभाजन UGC/CBCS के आधार पर संस्थाओं के द्वारा किया जाएगा).** [टिप्पणी : **जहॉ कुछ पाठ्यक्रमों मेंव्याख्यान (5) ट्यूटोरियल (2)**	**क्रेडिट के घंटों का विभाजन व्याख्यान, 4 /[5]/[4] ट्यूटोरियल,1/[1]/(0) अन्य 1 /[0]/[2]2 [टिप्पणी : षिक्षण और मूल्यांकन के अधिभार के आधार पर विभिन्न विकल्प निर्भर हो सकते हैं]**

		अन्य(0) आवष्यक है तो कुछ अन्य**पाठ्यक्रमों मेंव्याख्यान (4) ट्यूटोरियल (1) अन्य(1)** आवष्यक है	
1	सृजनात्मक लेखन	6	
2	पटकथा तथा संवाद लेखन	6	
3	साहित्य और सिनेमा	6	
4	सोशल मीडिया और हिंदी	6	
5	लोक नाट्य परम्परा और हिंदी	6	
6	राष्ट्रीय चेतना और हिंदी रंगमंच	6	
7	पर्यटन और साहित्य	6	

D. <u>हिंदी कौशल –संवर्धन ऐच्छिक पाठयक्रम (HSEC)</u>

<u>(कोई दोः क और ख वर्ग में से दो–दो का चयन)</u>

<u>क.</u>

	पाठ्यक्रम का शीर्षक	**क्रेडिट (2x4)**	क्रेडिट के घंटे संस्था के द्वारा निर्धारित किये जाएँगे।
1	लेखन कौशल	4	
2	भाषा शिक्षण कौशल	4	
3	अनुवाद कौशल (हिंदी से अंग्रेजी , अंग्रेजी से हिंदी)	4	
4	कम्प्यूटर अनुप्रयोग	4	

ख.

	पाठ्यक्रम का शीर्षक	**क्रेडिट (2x4)**	क्रेडिट के घंटे संस्था के द्वारा निर्धारित किये जाएँगे।
1	कार्यालयी हिंदी	4	
2	विज्ञापन और समाचार लेखन	4	
3	मीडिया के लिए साक्षात्कार	4	

प्रश्न पत्र–1.हिंदी साहित्य : आदिकाल से पूर्व मध्यकाल– रचनाएँ व इतिहास

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

- विद्यार्थी 11वीं शताब्दी से लेकर मध्यकाल के पूर्वार्ध तक के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक संदर्भों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- हिंदी साहित्य के प्रारंभिक और विकासात्मक स्वरूप से परिचित हो सकेंगे।
- हिंदी साहित्य के साहित्यकारों और उनकी रचनाओं के बारे में जान सकेंगे।
- हिंदी के भावगत, भाषागत और शैलीगत विकास से परिचित हो सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना–

- हिंदी के इतिहास का काल विभाजन
- आदिकाल का नामकरण
- आदिकालीन परिस्थितियाँ
- रासो काव्य परंपरा
- जैन साहित्य/नाथ साहित्य
- भक्ति काव्य और उसका वर्गीकरण
- निर्गुण भक्ति काव्य का स्वरूप
- प्रेमाख्यान काव्य की प्रवृत्तियां
- सगुण भक्ति काव्य की प्रवृत्तियां
- निर्गुण भक्ति काव्य की भाषा का स्वरूप

(पृथ्वीराज रासो, खुमान रासो, हमीर रासो, परमाल रासो) कबीरदास, रैदास, नानक देव, दादू दयाल, सुंदर दास, मलूकदास की रचनाएँ (पद्मावत, मधुमालती, रूप मंजरी) तुलसीदास, मीराबाई, अग्रदास, सूरदास, कुंभनदास, नंददास, छीतस्वामी।

सहायक ग्रंथ –

1. मध्यकालीन काव्य चिंतन और संवेदना, डॉ. करुणा शंकर उपाध्याय
2. कबीर की विचारधारा, डॉ. गोविंद त्रिगुणायत
3. विद्यापति, डॉ. शिवप्रसाद सिंह
4. कबीर साहित्य की परख, आचार्य परशुराम चतुर्वेदी
5. जायसी, डॉ. विजयदेव नारायण साही
6. सूर और उनका साहित्य, डॉ. हरवंशलाल शर्मा
7. मध्यकालीन काव्य वैभव, डॉ. शीलता प्रसाद दूबे
8. तुलसी काव्य मीमांसा, डॉ. उदयभानु सिंह
9. कबीर का रहस्यवाद, डॉ. रामकुमार वर्मा
10. तुलसी और उनका युग, डॉ. राजपति दीक्षित
11. मीराबाई .

प्रष्न पत्र–2.हिंदी साहित्य का उत्तर मध्यकाल– रचनाएँ व इतिहास

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम निम्नवत होगा–

- विद्यार्थियों को भारतवर्ष की 17वीं से 19वीं शताब्दी के मध्य के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक परिदृश्य आदि का ज्ञान प्राप्त होगा।
- इस काल के साहित्यकार और उनकी रचनाओं से वे परिचित हो सकेंगे।
- इस काल के साहित्य का भावात्मक और राजसत्तात्मक प्रभाव ज्ञान प्राप्त होगा।
- इससे सृजन के काव्य रूप का ज्ञान प्राप्त होगा।
- इससे साहित्य सृजन के आधार हिंदी भाषा और मौलिक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त होगा।

प्रस्तावित संरचना–

- उत्तर मध्यकाल नामकरण
- रीतिकालीन परिस्थितियाँ
- रीतिकालीन काव्य भाषा
- रीतिबद्ध काव्य की प्रवृत्तियाँ
- रीतिमुक्त काव्य की प्रवृत्तियाँ
- रीतिकालीन भक्ति का स्वरूप

  (बिहारी, मतिराम, सेनापति, भूषण, सेनापति,घनानंद)

सहायक ग्रंथ–

1. हिंदी में श्रृंगार परंपरा और महाकवि बिहारी, डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त
2. बिहारी का नवमूल्यांकन, डॉ. बच्चन सिंह

3. देव और बिहारी, कृष्ण बिहारी मिश्र
4. बिहारी की कविकृति, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
5. घनानंद और स्वच्छंद काव्यधारा, मनोहरलाल गौड़
6. भूषण साहित्यिक एवं ऐतिहासिक अनुशील, भगवानदास तिवारी
7. भूषण, राजमल बोरा
8. रीतिकालीन साहित्य का पुनर्मूल्यांकन, रामकुमार वर्मा
9. रीतिकाव्य की भूमिका, डॉ. नगेंद्र

प्रष्न पत्र – 3.हिंदी साहित्य : भारतेंदु युगीन कविता से छायावादी कविता तक – रचनाएँ व इतिहास

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

1. इस पाठ के तीन खंड होंगे–भारतेंदु युगीन कविता, द्विवेदी युगीन कविता और छायावादी कविता। इस प्रकार 20वीं शताब्दी की शुरुआत के कुछ पूर्व से ही इस पाठ में विद्यार्थियों को कविता के स्वरूप का ज्ञान होगा। छायावादी कविता के काल तक आते–आते कविता की भाषा–शिल्प और संवेदना के क्रमिक विकास को विद्यार्थी जान सकेंगे।
2. भारतेंदु युग से छायावाद तक के काल की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों एवं परिवेश से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे।
3. तत्कालीन राजनीति, सांस्कृतिक आंदोलनों एवं उनके साहित्यिक रूपान्तरण के बारे में जान सकेंगे।
4. राष्ट्रीय नवजागरण के परिदृश्य से परिचित हो सकेंगे।
5. ब्रजभाषा से क्रमशः खड़ी बोली के कविता भाषा बनने और निखरने के इतिहास से परिचित हो सकेंगे।
6. छायावादी काव्य संवेदना और अभिव्यक्ति सौंदर्य से परिचित हो सकेंगे।
7. आख्यानों की आधुनिकता से अवगत होंगे।

प्रस्तावित संरचना–

भारतेंदु युग (नवजागरण काल)

- भारतेंदु पूर्व काव्यधारा (पीठिका)
- भारतेंदु युगीन परिवेश : सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवेश
- भारतेंदु युगीन काव्यधारा : सामाजिक चेतना, भक्ति भावना, श्रृंगार प्रियता, प्रकृति प्रेम, राष्ट्रीय चेतना, समस्यापूर्ति, हास्य आदि।

- भारतेंदु युगीन कवि : भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रतापनारायण मिश्र, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', अम्बिकादत्त व्यास, जगमोहन सिंह, राधाकृष्ण दास, राधाचरण गोस्वामी आदि।
- कवियों की रचनाएँ

  द्विवेदीयुग – जागरण–सुधार काल
- द्विवेदीयुगीन कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ : राष्ट्रीयता, मानवता, नीति और आदर्श, वर्ण्य विषयों में विविधता और क्षेत्र विस्तार, हास्य–व्यंग्य संबंधी काव्य, विभिन्न काव्य रूपों का प्रयोग, छंद वैविध्य, भाषा सौष्ठव आदि।
- द्विवेदीयुगीन कवि : श्रीधर पाठक, महावीर प्रसाद द्विवेदी, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही', रामचरित उपाध्याय, मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी आदिकवियों की रचनाएँ ।

छायावादी युग

- छायावाद नामकरण का आधार और परिवेश
- छायावाद युगीन कविता की प्रमुख धाराएँ एवं प्रवृत्तियाँ
- छायावाद युगीन राष्ट्रीय– सांस्कृतिक काव्यधारा के प्रमुख के कवि : माखनलाल चतुर्वेदी, सियारामशरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुभद्रा कुमारी 'चौहान' आदि।
- राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा की रचनाएँ
- छायावादी कवि : जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी, सुमित्रानंदन पंत आदि की छायावादी रचनाएँ।

सहायक ग्रंथ

1. छायावाद का पतन, देवराज उपाध्याय
2. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण, डॉ. रामविलास शर्मा

3. भारतेंदु हरिश्चंद्र और हिंदी नवजागरण, डॉ. रामविलास शर्मा
4. नवजागरण की समस्याएँ, डॉ. रामविलास शर्मा
5. छायावाद की प्रासंगिकता, रमेशचंद्र शाह

प्रश्नपत्र 4 हिंदी साहित्य : प्रगतिवाद से बीसवीं शताब्दी तक – रचनाएँ व इतिहास

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

1. उत्तर छायावाद युग की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों एवं विसंगतियों से उपजे काव्यान्दोलनों से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे।
2. प्रगतिशील चेतना का वैचारिक आधार और अभिप्राय स्पष्ट रूप से जान सकेंगे।
3. इतिहास दृष्टि और लोकजीवन तथा प्रकृति से कविता के सरोकार को रेखांकित कर सकेंगे।
4. प्रयोगवादी काव्य की रचनात्मक प्राथमिकताओं, भावबोध और भाषा को समझ सकेंगे।
5. समकालीन कविता के युगबोध को वस्तुगत सामाजिक आर्थिक परिप्रेक्ष्य सहित समझ सकेंगे।
6. वैश्वीकरण और भूमण्डलीकरण के परिप्रेक्ष्य और चुनौतियों को समझने का आधार मिलेगा।
7. पर्यावरण संबंधी रचनाओं से विद्यार्थी अवगत हो सकेंगे।
8. आख्यानों की आधुनिकता से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना–

- छायावादोत्तर काव्य परिदृश्य और छायावादोत्तर कविता की भूमिका।
- छायावादोत्तर कविता में यथार्थदृष्टि के उदय का स्वरूप : संदर्भ–निराला की यथार्थ दृष्टि सम्पन्न कविताएँ और पंत का उत्तर छायावादी काव्य।
- भाव बोध और काव्य भाषा में बदलाव के संदर्भ।
- छायावदोत्तर काव्य धारा : प्रमुख प्रवृत्तियाँ
- छायावदोत्तर गीतधारा एवं प्रमुख कवि
- प्रगतिवादी काव्यधारा एवं प्रमुख कवि
- प्रयोगवादी काव्यधारा एवं प्रमुख कवि :

- नयी कविता : ऐतिहासिक परिदृश्य, काव्य प्रवृत्तियाँ और प्रमुख कवि
- अकविता : प्रमुख प्रवृत्तियाँ और प्रमुख कवि
- समकालीन कविता और प्रमुख कवि

सहायक ग्रंथ–

1. नयी कविता : सीमाएँ और संभावनाएँ, गिरजाकुमार माथुर
2. नयी कविता : स्वरूप एवं समस्याएँ, जगदीश गुप्त
3. समकालीन हिंदी साहित्य : विविध परिदृश्य, रामस्वरूप चतुर्वेदी
4. आधुनिक हिंदी साहित्य : विविध आयाम, रामचंद्र तिवारी
5. प्रगतिवाद, रामविलास शर्मा
6. प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ, रामविलास शर्मा

प्रश्न पत्र –5 कथा साहित्य : कहानी व उपन्यास

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगा –

- कथा साहित्य के माध्यम से विद्यार्थी सम्पूर्ण मानव जगत की मानवीयता से परिचित होंगे।
- कथा साहित्य विद्यार्थियों को जीवन की वास्तविकता से परिचित करायेगा।
- कथा साहित्य के माध्यम से विद्यार्थियों में रचनात्मक विचार और सृजन धर्म का विकास होगा।
- कथा साहित्य के विभिन्न संदर्भो और घटनाओं से विद्यार्थियों को जीवन में गतिशील रहने की प्रेरणा मिलेगी।
- कथा साहित्य से विद्यार्थियों को गंभीर भावबोध को समझने का अवसर मिलेगा।

प्रस्तावित संरचना–

कहानी, उपन्यास व नाटक

इकाई– कहानियाँ

1. माँ – मुंशी प्रेमचन्द
2. उसने कहा था – पं. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
3. पुरस्कार–जयशंकर प्रसाद
4. पाजेब– जैनेन्द्र कुमार
5. तीसरी कसम– फणीश्वर नाथ रेणु
6. चीफ की दावत – भीष्म साहनी
7. मलबे का मालिक – मोहन राकेश
8. नीली झील –कमलश्वेर
9. पासपोर्ट का रंग – तेजेन्द्र शर्मा
10. मैं हार गई – मन्नू भंडारी

11. लंदन की एक रात– निर्मल वर्मा
12. रोज – अज्ञेय

इकाई 2. उपन्यास

1 गोदान – मुंशी प्रेमचन्द
2 रागदरबारी – श्री लाल शुक्ल
3 मानस का हंस – अमृतलाल नागर
4 पचपन खंभे लाल दीवारें–उषा प्रियंवदा
5 पुनर्नवा– हजारी प्रसाद द्विवेदी
6 दीक्षा –नरेन्द्र कोहली
7 ललितादित्य – भगवतीचरण वर्मा
8 हिडिम्बा – देवेंद्र नाथ सुदामा
9 झांसी की रानी– वृंदावनलाल वर्मा

सहायक ग्रन्थ–

- कुछ कहानियाँ : कुछ विचार – विश्वनाथ त्रिपाठी
- हिंदी गद्य विन्यास और विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
- हिंदी कहानी का विकास– मधुरेश
- प्रेमचन्द और उनका युग– डॉ0 रामविलास शर्मा
- उपन्यास का शिल्प – डॉ0 गोपाल राय
- हिंदी उपन्यास की विकास यात्रा – मधुरेश
- उपन्यास का यथार्थ और रचनात्मक भाषा – परमानन्द श्रीवास्तव

प्रश्न पत्र – 6 : हिंदी नाट्य साहित्य

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगा–

- विद्यार्थियों में संवाद–कला/वक्तृत्व–कला का विकास।
- नाट्य मंचन के माध्यम से विद्यार्थियों में अभिनय–कला का विकास।
- शिक्षण में नाट्य कार्यशाला की अनिवार्यता सुनिश्चित करके भाषा/अभिव्यक्ति–कौशल और पटकथा लेखन के ज्ञान का विकास।
- किसी एक नाटक का अनिवार्य मंचन सुनिश्चित करना जिससे विद्यार्थियों का नाट्य स्वरूप से परिचय हो सके। विद्यार्थियों में राष्ट्रीय और सांस्कृतिक ऐक्य का भाव विकसित करना।

प्रस्तावित संरचना–

- हिंदी नाटक का इतिहास व विकास।
- लोकरंग परंपराओं का हिंदी रंगमंच पर प्रभाव– रामलीला, रासलीला, अंकिया नाट्य, पंडवानी, बिदेसिया के संदर्भ में।
- हिंदी रंगमंच के विभिन्न रूप– शौकिया रंगमंच; व्यावसायिक रंगमंच; सरकारी रंगमंच
- रंगशिल्प प्रशिक्षण, रंगस्थापत्य, रंगसज्जा, रंगदीपन, ध्वनि व्यवस्था एवं प्रसाधन, निर्देशन एवं अभिनय।
- रंगमंचीय प्रयोगों के माध्यम से भाषा–शिक्षण पर जोर एवं साहित्यिक अभिरुचियों का विकास।
- निम्नलिखित नाटकों का वस्तुचित्रण, विषय प्रतिपादन एवं चरित्रांकन। नाट्य प्रशिक्षण द्वारा इनके प्रायोगिक एवं व्यावहारिक पक्ष का विकास :

नाटक–

- अंधेर नगरी –भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
- ध्रुवस्वामिनी–जयशंकर प्रसाद
- आषाढ़ का एक दिन– मोहन राकेश

- अंधा युग–धर्मवीर भारती
- संशय की एक रात–नरेश मेहता
- आठवाँ सर्ग– सुरेंद्र वर्मा
- रक्ताभिषेक – दयाप्रकाष सिन्हा

एकांकी–

- पारिजात हरण – शंकर देव
- दीपदान – रामकुमार वर्मा
- तौलिये – अश्क

प्रत्येक विश्वविद्यालय/महाविद्यालय उपरोक्त में से तीन नाटकों तथा दो एकांकियों को विकल्प के रूप में पाठ्यक्रम में सम्मिलित करेंगे तथा तद्नुकूल व्याख्या तथा प्रश्नों का विभाजन किया जाएगा।

सहायक ग्रंथ–

1. संक्षिप्त नाट्यशास्त्रम्– राधावल्लभ त्रिपाठी
2. हिंदी नाटक : उद्भव और विकास– डॉ. दशरथ ओझा
3. रंगमंच : नया परिदृश्य– रीतारानी पालीवाल
4. एकांकी और एकांकीकार– रामचरण महेन्द्र
5. भारतीय एवं पाश्चात्य रंगमंच– सीताराम चतुर्वेदी
6. रंगदर्शन– नेमिचन्द्र जैन
7. महाकवि शंकरदेव : विचारक एवं समाज सुधारक– डॉ. कृष्ण नारायण प्रसाद ''मागध''
8. मोहन राकेश का रंगमंच – चन्दन कुमार

9. शंकरदेव के नाटक और रंगमंचीयता– डॉ. धर्मदेव तिवारी ''शास्त्री''

10. यदाकदा– चन्दन कुमार

12. आधुनिक नाटक का मसीहा – मोहन राकेश – डॉ0 गोविन्द चातक

13. हिंदी नाटक का आत्मसंघर्ष – गिरीश रस्तोगी

14. भारतीय नाट्यशास्त्र – बाबू श्यामसुन्दर दास

15. आधुनिक हिंदी नाटक – डॉ0 नगेन्द्र

16. भारतीय नाट्य परम्परा – नेमिचन्द्र जैन

17. प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन – डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा

प्रश्न पत्र –7– कथेत्तर गद्य साहित्य

7–1.

- निबंध
- जीवनी
- आत्मकथा

7–2.

- यात्रा वृत्तांत
- डायरी
- रिपोर्ताज
- रेखाचित्र
- पत्र साहित्य
- संस्मरण

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

- हिंदी गद्य के कथा साहित्य से भिन्न अन्य गद्य विधाओं का ज्ञान प्राप्त होगा।
- विभिन्न हिंदी की कथेतर विधाओं के स्वरूप का ज्ञान होगा।
- युगीन संदर्भों के आलोक में कथेतर गद्य विधाओं को जान सकेंगे।
- इनके अध्ययन से विद्यार्थी व्यक्तियों, स्थानों, प्रकृति एवं पर्यावरण से परिचित हो सकेंगे।
- गंभीर भावचिंतन,हास्य और मनोरंजन से जुड़कर लाभान्वित होंगे।

प्रस्तावित संरचना–

निबंधः निबंध की परिभाषा स्वरूप एवं वैविध्य तथा प्रमुख निबंध

ईर्ष्या :रामचन्द्र शुक्ल

नाखून क्यों बढ़ते हैंः हज़ारी प्रसाद द्विवेदी

मज़दूरी और प्रेमः सरदार पूर्ण सिंह

पगडंडियों का ज़माना : हरिशंकर परसाई

ये हैं प्रोशंशाक : विष्णुकान्तशास्त्री

रस आखेटक : कुबेरनाथ राय

जीवनी : जीवनी की परिभाषा,स्वरूप, वैशिष्ट्य एवं जीवनी लेखक

हिंदी की प्रमुख जीवनियों एवं जीवनी लेखकों का परिचय

आत्मकथा : परिभाषा, स्वरूप एवं वैशिष्ट्य

हिंदी की प्रमुख आत्मकथाओं एवं लेखकों का परिचय

यात्रावृत्तांत : परिभाषा, स्वरुप, वैशिष्टय एव ंप्रमुख यात्रा वृत्तांत एवं लेखकों का परिचय

संस्मरण : परिभाषा, स्वरुप, वैशिष्टय एवं प्रमुख संस्मरण एवं लेखकों का परिचय

कथेत्तरगद्य साहित्य की अन्य विधाएँ : यथा – डायरी, रेखाचित्र, पत्र साहित्य एवं रिपोर्ताज और उनके लेखकों का परिचय

सहायक ग्रंथः

1. गद्य की नई विधाओं का विकास, माजदा असद
2. गद्य की पहचान, अरुण प्रकाश
3. डॉ. भदन्त आनंद कौशल्यायन जीवन दर्शन, भदन्त सावंगी मेधकर
4. हिंदी का गद्य विन्यास और विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी
5. हिंदी का गद्य साहित्य, रामचंद्र तिवारी
6. हिंदी गद्य रूप सैद्धांतिक विवेचन, निर्मला देवी श्रीवास्तव
7. हिंदी निबंध उद्भव और विकास, हरिचरण शर्मा
8. हिंदी का आधुनिक यात्रा साहित्य, प्रतापपाल शर्मा

प्रश्न पत्र – 8: हिंदी गद्य साहित्य का इतिहास

पाठ्यक्रम के इस अंशका अधिगम परिणाम निम्नवत् होगा–

- साहित्य की विस्तृत नवीन गद्यविधाओं से विधार्थी परिचित होंगे।
- गद्य की विविध विधाओं कवि का सात्मक ज्ञान प्राप्त होगा।
- गद्य साहित्य के माध्यम से युगीन विभिन्न चुनौतियों का ज्ञान प्राप्त होगा।
- गद्य साहित्य के माध्यम से युगीन राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिवेशो ंका ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।
- गद्य साहित्य के माध्यम से आधुनिक एवं उत्तर आधुनिक स्थितियों का बोध होगा।

प्रस्तावित संरचना–

- हिंदी कथा साहित्य का विकास : भारतेंदु से अद्यतन।
- हिंदी नाट्य साहित्य का विकास : भारतेंदु से अद्यतन।
- हिंदी निबंध साहित्य का विकास : भारतेंदु से अद्यतन।
- हिंदी की कथेत्तर विधाओं का विकास : आलोचना, जीवनी, संस्मरण, यात्रा वृत्तांत एवं रिपोर्ताज

सहायक ग्रंथ –

- हिंदी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
- हिंदी साहित्य का इतिहास : संनगेन्द्र
- हिंदी साहित्य की भूमिका – हज़ारी प्रसाद द्विवेदी
- हिंदी का गद्य साहित्य – रामचन्द्र तिवारी
- हिंदी गद्य :विन्यास और विकास – रामस्व रूप चतुर्वेदी
- आधुनिक साहित्य – नंद दुलारे वाजपेयी
- भारतेंदु और हिंदी नवजागरण की समस्याएँ – राम विलास शर्मा
- हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास– गणपति चंद्र गुप्त

प्रश्न पत्र – 9–हिंदी आलोचना

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक विवेक/समीक्षात्मक दृष्टि का विकास होगा।
- भारतीय प्रतिश्रुति से उनका परिचय हो सकेगा।
- विद्यार्थियों में भाषा–शिक्षण के संस्कारों का विकास होगा।
- उत्तर–पूर्व से सम्बन्धित हिंदी आलोचकों के परिचय द्वारा राष्टीय एकात्मक भाव का विकास एवं हिंदी की राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार्यता की पहचान।

प्रस्तावित संरचना–

- भारतीय साहित्यिक आलोचना की पृष्ठभूमि
- हिंदी आलोचना की परंपरा और विकास
- हिंदी के प्रमुख आलोचक– आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नंद दुलारे वाजपेयी, हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. नगेंद्र, रामविलास शर्मा, राममूर्ति त्रिपाठी, रामस्वरूप चतुर्वेदी

सहायक ग्रंथ–

1. चिन्तामणि– भाग–1 – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य की भूमिका– आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
3. हिंदी साहित्य की प्रसिद्ध भूमिकाएँ – संपादन– कृष्णदत्त पालीवाल
4. आस्था के चरण – डॉ. नगेन्द्र
5. हिंदी जाति का साहित्य – रामविलास शर्मा
6. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
7. भारत की संत परंपरा और सामाजिक समरसता – डॉ. कृष्णगोपाल
8. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिंदी आलोचना – डॉ. रामविलास शर्मा
9. हिंदी गद्य, विन्यास और विकास– रामस्वरूप चतुर्वेदी
10. हिंदी आलोचना : शिखरों का साक्षात्कार– डॉ. रामचन्द्र तिवारी

प्रष्न पत्र – 10–हिंदी भाषा और भाषा विज्ञान

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

1. विद्यार्थियों को भाषा के स्वरूप और महत्त्व का ज्ञान प्राप्त होगा।
2. विद्यार्थी भारत को एक सूत्र में बाँधनेवाली हिंदी भाषा की विविध बोलियों से परिचित हो सकेंगे।
3. विद्यार्थियों को हिंदी भाषा की शारीरिक इकाइयों दृश्य, ध्वनि, शब्द, वाक्य आदि का ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।
4. हिंदी के अर्थ–विकास की जानकारी प्राप्त हो सकेगी।
5. वैज्ञानिक और उपयोगी लिपि 'नागरी' का अपेक्षित ज्ञान प्राप्त होगा।

प्रस्तावित संरचना–

- भाषा : परिभाषा, स्वरूप और प्रवृत्तियाँ
- भाषा और बोली
- हिंदी भाषा की विविध बोलियाँ
- हिंदी का मानकीकरण
- ध्वनि : परिभाषा और हिंदी स्वर और व्यंजन ध्वनियों का वर्गीकरण
- शब्द : परिभाषा और स्रोत के आधार पर वर्गीकरण
- वाक्य : परिभाषा, वाक्य के अनिवार्य तत्व और संरचना के आधार पर वर्गीकरण
- अर्थ : परिभाषा और अर्थ–विकास (परिवर्तन) की दिशाएँ
- नागरी लिपि का वर्तमान स्वरूप और वैज्ञानिकता

संदर्भ ग्रंथ –

- भाषा विज्ञान, डॉ. भोलानाथ तिवारी।
- भाषा विज्ञान की भूमिका, आ. देवेंद्रनाथ शर्मा।
- हिंदी भाषा का उद्भव और विकास, डॉ. उदयनारायण तिवारी
- भाषा और समाज, डॉ. रामविलास शर्मा

प्रष्न पत्र – 11–भारतीय काव्यशास्त्र

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

- विद्यार्थी भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा से परिचित हो सकेंगे।
- काव्य के महत्वपूर्ण उपादानों से परिचित हो सकेंगे
- काव्यशास्त्र के विभिन्न सम्प्रदायों की जानकारी होने पर विद्यार्थियों में काव्य के पाठ को समझने की क्षमता विकसित हो सकेगी।
- विद्यार्थी साहित्य सृजन के मूलाधार, सृजन की केन्द्रीय चेतना और उसके विभिन्न प्रयोजनों को समझ सकेंगे।
- उनमें साहित्य सृजन की अभिरुचि पैदा हो सकेगी।
- विद्यार्थी कविता के मानकों को समझकर कविता का सही ढंग से विश्लेषण कर सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना–

- भारतीय काव्य शास्त्र की परम्परा का सामान्य परिचय
- काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन
- काव्यशास्त्रीय सम्प्रदाय –
- रस सिद्धांत : रस का स्वरूप और भेद , रस निष्पत्ति ,साधारणीकरण
- ध्वनि सिद्धांतः ध्वनि की परिभाषा, ध्वनि के भेद
- अलंकार सिद्धांतः परिभाषा, लक्षण, अलंकार के भेद
- रीति सिद्धांतः रीति का अर्थ, रीति के भेद,
- वक्रोक्ति सिद्धांतः वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद
- औचित्य सिद्धांतः औचित्य की अवधारणा

सहायक ग्रंथ –

- भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका– डॉ नगेन्द्र
- रस सिद्धांत –स्वरूप विश्लेषण –डॉ आनंद प्रकाश दीक्षित
- भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत–डॉ कृष्णदेव शर्मा
- भारतीय काव्यशास्त्र –डॉ उदयभानु सिंह
- भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत –डॉ कृष्णदेव झारी
- भारतीय काव्यशास्त्र के नये क्षितिज –डॉ राममूर्ति त्रिपाठी
- रस मींमासा –आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
- काव्यशास्त्र –भगीरथ मिश्र
- भारतीय काव्यशास्त्रः सुबोध विवेचन –सत्यदेव चौधरी

प्रश्नपत्र– 12 पाश्चात्य काव्य शास्त्र

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

- विद्यार्थी पश्चिमी साहित्य चिंतन की परम्परा से परिचित हो सकेंगे।
- विद्यार्थियों में आलोचना दृष्टि विकसित होगी।
- वे भारतीय और पाश्चात्य आलोचना दृष्टियों का तुलनात्मक विवेचन कर सकेंगे।
- उन्हें आलोचना की नयी प्रणालियों का ज्ञान प्राप्त होगा।
- उनमें साहित्य को समझने की दृष्टि विकसित हो सकेगी।

प्रस्तावित संरचना–

- प्लेटोः काव्यसंबंधीअवधारणाएँ
- अरस्तू :अनुकरण संबंधी अवधारणा,विवेचन एवं त्रासदी संबंधी सिद्धांत
- लोंजाइनस :उदात्त सिद्धांत
- वर्ड्सवर्थ :काव्य भाषा का सिद्धांत
- कॉलरिज :काव्यसंबंधी अवधारणा, कल्पना और फैंटेसी
- क्रोचे :अभिव्यंजनावाद
- टी.एस. इलियट :परम्परा और वैयक्तिक प्रतिभा, निर्वैयक्तिकताका सिद्धांत, वस्तुनिष्ठ सह संबंध।
- आई.ए. रिचड्र्सः मूल्यसिद्धांत, संप्रेषण सिद्धांत
- वादऔरसिद्धांत : स्वच्छंदतावाद, अस्तित्ववाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद, आधुनिकतावाद, उत्तरआधुनिकतावाद
- कल्पना, बिम्ब, फैंटेसी

सहायक ग्रंथ–

- पाश्चात्य काव्यशास्त्र क`सिद्धांत –डॉशान्तिस्वरूपगुप्त
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र –डॉ.बच्चनसिंह
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र – देवेन्द्रनाथशर्मा
- पाश्चात्य साहित्य चिंतन– निर्मलाजैन
- पाश्चात्य काव्य शास्त्र – इतिहास, सिद्धांतऔरवाद – डॉ भगीरथ मिश्र

प्रश्न पत्र– 13 मीडिया के विविधआयाम

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

- मीडिया के विविध रूपों से परिचित होने पर छात्र मीडिया के क्षेत्र में रोज़गार के नये अवसर तलाश सकेंगे।
- मीडिया लेखन के विविध आयाम छात्रों की सृजनात्मक क्षमता को विकसित करने के अवसर प्रदान करेंगे।
- विज्ञापन लेखन छात्रो ंको विज्ञापन की संदेश रचना में दक्षकर विज्ञापन एजेंसियों में छात्रों के रोज़गार की संभावनाओं को बढ़ायेगा।
- मीडिया की भाषा के विविधरूपों की समझ छात्रो ंको भाषा की शक्ति और सामर्थ्य से परिचित करायेगी।
- न्यूमीडिया की सही समझ छात्रों को समाज के साथ सकारात्मक संवाद स्थापित करने की दिशा में प्रवृत्त कर सकेगी।

प्रस्तावित संरचना–

1.मीडिया के विकास के चरण

- स्वाधीनता पूर्व और स्वाधीनता के बाद का मीडिया

1. मीडिया के विविध रूप और उनकी उपयोगिता–

    क– प्रिंट मीडिया

    ख– इलैक्ट्रॉनिक मीडिया – टेलीविजन, रेडियो और फ़िल्में

2. न्यूमीडिया

- न्यूमीडियासेअभिप्राय
- न्यूमीडियाकेविविध रूप
- न्यू मीडिया का सामाजिक –सांस्कृतिक प्रभाव

3. मीडिया लेखन के सृजनात्मक आयाम

- समाचार लेखन
- संपादकीय लेखन
- स्तंभलेखन
- फीचरलेखन

4. विज्ञापनः अवधारणा और स्वरूप

- विज्ञापन का उद्देश्य और महत्व
- विज्ञापन लेखन

5. मीडिया और हिंदी भाषा

- समाचार पत्रों की भाषा
- टेलीविजन की भाषा
- रेडियो की भाषा
- सोशल मीडिया की भाषा

सहायक ग्रंथः

1. विज्ञापन माध्यम एवं प्रचार –डॉ.विजय कुलश्रेष्ठ / प्रतुलअथइया
2. जनसंचार माध्यम :विविध आयाम– बृज मोहन गुप्त
3. जनमाध्यम :संप्रेषण और विकास–देवेन्द्र इस्सर
4. हिंदीपत्रकारिता :कल आज और कल– सं.सुरेश गौतम
5. मीडियाकीभाषा – डॉ.वसुधागाडगिल
6. टेलीविजन की दुनिया –प्रभु झिंगरन
7. पत्रसंपादन कला– नन्द किशोर त्रिखा

प्रश्न पत्र–14 प्रयोजनमूलक हिंदी

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

- प्रयोजन मूलक हिंदी की उपयोगी जानकारी प्राप्त कर छात्र रोज़गार के सरकारी तथा ग़ैरसरकारी क्षेत्रो ंके लिए हिंदी के प्रयोग में दीक्षित हो सकेंगे।
- हिंदी भाषा और उस के विविध प्रयोगों की जानकारी प्राप्त कर छात्र राजभाषा हिंदी के संवर्द्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगे।
- पारिभाषिक शब्दावली के माध्यम से छात्र प्रयोजन मूलक हिंदी के वैशिष्ट्य को समझ सकेंगे।
- छात्र कामकाज से संबंधित पत्र लेखन में सक्षम हो सकेंगे।
- विज्ञापन लेखन का कौशल प्राप्त कर छात्र विज्ञापन एजेंसियों में रोज़गार पा सकेंगे।
- छात्रों में अनुवाद कार्य की समझ और अनुवाद कार्य करने की क्षमता विकसित हो सकेगी।
- छात्रों में भाषा का मौखिक और लिखित कौशल संवर्धन हो सकेगा।

प्रस्तावित संरचना–

1. प्रयोजन मूलक हिंदी की अवधारणा और संभावनाएँ
- प्रयोजन मूलक हिंदी से अभिप्राय व विशेषताएँ
- प्रयोजन मूलक हिंदी और साहित्यिक हिंदी में अंतर
- रोजगार के क्षेत्र में प्रयोजन मूलक हिंदी की संभावनाएँ

2. प्रयोजन मूलक हिंदी :प्रयुक्ति और क्षेत्र
- कार्यालयी हिंदी
- तकनीकी हिंदी
- व्यावसायिक हिंदी
- संचार माध्यम की हिंदी

3. कम्प्यूटर की हिंदी

4. पारिभाषिक शब्दावली का अर्थ और स्वरूप

- 100 पारिभाषिक शब्द

5. पत्र लेखन

- सरकारी पत्र लेखन
- अर्ध सरकारी पत्र लेखन
- व्यावसायिक पत्र लेखन

6. ज्नसंचार माध्यमों के लिए लेखन

- ज्नसंचार की परिभाषा
- विज्ञापन की परिभाषा
- विज्ञापन लेखन के तत्व
- समाचार की परिभाषा
- उद्घोषणा लेखन

7. अनुवाद

- प्रयोजन मूलक हिंदी के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व
- अनुवाद के प्रकार
- कार्यालयी अनुवाद की समस्याएँ ।

सहायक ग्रंथ–

1. प्रयोजन मूलक कामकाजी हिंदी–डॉकैलाशचंद्र भाटिया,
2. अनुवाद कला –डॉ एन.ई.विश्वनाथ अय्यर,
3. प्रयोजन मूलक हिंदी :विविध परिदृश्य –डॉ रमेशचन्द्र त्रिपाठी,
4. प्रशासन में राजभाषा हिंदी– डॉ कैलाशचंद्र भाटिया,
5. प्रयोजन मूलक हिंदी के विविध रूप –डॉ राजेन्द्र मिश्र/राकेश शर्मा,
6. भाषा के विविध रुप और अनुवाद –प्रो.कृष्ण कुमार गोस्वामी,
7. प्रयोजन मूलक हिंदी– डॉ रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव,

हिंदी सामान्य (generic) आत्मिक पाठ्यक्रम (HGEC)

(यह पाठ्यक्रम हिंदी ऑनर्स के अतिरिक्त अन्य विषयों के ऑनर्स के विद्यार्थियों के लिए निर्धारित है)

प्रष्न पत्र –1. सृजनात्मक लेखन

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थियों में प्रकृति और परिवेश को समझने की दृष्टि विकसित हो सकेगी।
2. इस पाठ के द्वारा विद्यार्थियों की प्रतिभा में निखार आएगा और उनकी कल्पनाशक्ति विकसित होगी।
3. कला, साहित्य,विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में मौलिक उपस्थापना करने में सक्षम हो सकेंगे।
4. शिक्षा के क्षेत्र में नवीन आयामों का उद्घाटन कर सकेंगे।
5. चित्रकला, मूर्तिकला, फोटोग्राफी, इन्स्टालेशन, नृत्य–गीत संगीत, कविता, कहानी, नाटक, संस्मरण एवं रिपोर्ताज रचना में समर्थ हो सकेंगे।
6. पत्रकारिता, दूरदर्शन के समाचार और धारावाहिक के साथ ही फिल्म संवाद लेखन की कला में पारंगत हो सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना–

- सृजनात्मकता का अर्थ व परिभाषा
- सृजनात्मक लेखन का अर्थ, परिभाषा व स्वरूप
- सृजनात्मक लेखन के तत्व

- सृजनात्मक लेखन के विविध रूप –कविता, कहानी, नाटक, धारावाहिक, फिल्म संवाद, कार्टून, संस्मरण रेखाचित्र आदि।

सहायक ग्रंथ–

1. रचनात्मक लेखन, सं. रमेश गौतम
2. रचनात्मक लेखन, हरीश अरोड़ा, अनिल कुमार सिंह
3. सृजनात्मक लेखन, राजेंद्र मिश्र
4. संचार भाषा हिंदी, सूर्यप्रसाद दीक्षित

प्रष्न पत्र –2. पटकथा तथा संवाद लेखन

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिग

म परिणाम निम्नवत होगा–

1. इस पाठ के अध्ययन से विद्यार्थियों में सृजनात्मक क्षमता का विकास होगा।
2. विद्यार्थियों में रचनात्मक प्रतिभा का स्फुरण होगा और उनकी कल्पनाशक्ति विकसित होगी।
3. कहानी, कविता, उपन्यास का दृश्य रूपान्तरण करने की कला का ज्ञान होगा।
4. संवाद रचना कौशल का विकास होगा।
5. आधुनिक तकनीक के साथ पटकथा के संवादों में सामंजस्य स्थापित करने और समन्वय की कला का विकास होगा।
6. इस पाठ से प्राप्त ज्ञान के आधार पर पटकथा लेखन के क्षेत्र में योगदान देने में समर्थ होंगे।
7. विज्ञापन के क्षेत्र की दृष्टि से भी विद्यार्थी समर्थ हो सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना–

- पटकथा का अर्थ और परिभाषा । पटकथा लेखन में प्रतिभा, कल्पना और अभ्यास /परिश्रम का महत्व।
- कथा और पटकथा का अन्तर।
- संवाद का अर्थ और पटकथा से संवाद का संबंध ।
- पटकथा लेखन का स्वरूप : प्रस्थान बिंदु अर्थात प्रस्तावना, संघर्ष और समाधान।
- पटकथालेखन सूत्र अर्थात प्रारंभ, मध्यभाग और अंत
- पटकथा और संवाद लेखन : नाट्यशास्त्र के संदर्भित अंश का अध्ययन
- पटकथा के फिल्मांकन की तकनीक

- पटकथा–संवाद और संगीत ध्वनि का अंतर्संबंध

सहायक ग्रंथ–

1. पटकथा लेखन : मनोहर श्याम जोशी,
2. पटकथा कैसे लिखें: राजेंद्र पांडेय
3. कथा पटकथा: मन्नू भंडारी

प्रष्न पत्र –3. साहित्य और सिनेमा

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

1. इस पाठ में साहित्य और सिनेमा के अंतर्संबंध को समझा जा सकेगा।
2. हिंदी सिनेमा के इतिहास से विद्यार्थी परिचित होंगे।
3. हिंदी सिनेमा के विकास में हिंदी साहित्य के योगदान को रेखांकित किया जाएगा।
4. विद्यार्थी सिनेमा की कला और हिंदी साहित्य में निहित कलात्मक तत्वों की पहचान कर सकेंगे।
5. पटकथा लेखन और फिल्म निर्माण की कला के बारे में जान सकेंगे।
6. विद्यार्थी अपने अर्जित ज्ञान का उपयोग निर्माता, लेखक और अभिनेता बनने में कर सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना–

- साहित्य का अर्थ : क्षेत्र विस्तार
- साहित्य की विधाएँ : कहानी, उपन्यास और नाटक आदि
- साहित्य के उपकरण : शिल्प और संवेदना
- हिंदी सिनेमा का इतिहास
- हिंदी सिनेमा में प्रमुख पौराणिक, ऐतिहासिक साहित्यिक कृतियों का उपयोग
- हिंदी की साहित्यिक कृतियों के उपयोग का सिनेमा पर प्रभाव
- प्रमुख हिंदी साहित्यकारों की कृतियाँ और उन पर बनी फिल्में
- साहित्य और सिनेमा में समानता एवं अंतर

सहायक ग्रंथ–

1. उत्तर आधुनिक मीडिया तकनीक, हर्षदेव
2. जनमाध्यम, पीटर गोल्डिंग
3. जनमाध्यम सैद्धांतिकी, जगदीश्वर चतुर्वेदी
4. सिनेमा और साहित्य, हरीश कुमार
5. 'वसुधा' पत्रिका : फिल्म विशेषांक
6. सिनेमा और संस्कृति : राही मासूम रज़ा

प्रष्न पत्र –4. सोशल मीडिया और हिंदी

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

1. विद्यार्थी सोशल मीडिया के विभिन्न माध्यमों से परिचित हो सकेंगे।
2. सोशल मीडिया के उपयोग क्षेत्र से परिचित हो सकेंगे।
3. सोशल मीडिया के व्यावसायिक उपयोग को समझ सकेंगे।
4. विद्यार्थी संस्कृतिक कर्म की दृष्टि से सोशल मीडिया का उपयोग करना सीख सकेंगे।
5. सोशल मीडिया का शैक्षिक क्षेत्र में उपयोग करना सीख सकेंगे।
6. सोशल मीडिया के दुष्प्रभावों से बचने की दृष्टि विकसित हो सकेगी।

प्रस्तावित संरचना–

- सोशल मीडिया : माध्यम का स्वरूप – एक अपरंपरागत मीडिया।
- सोशल मीडिया के प्रकार : ट्विटर, व्हाट्सएप, फेसबुक, इंस्टाग्राम आदि।
- सोशल मीडिया का प्रभाव : सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक

- हिंदी भाषा का सोशल मीडिया में उपयोग : भाषा के स्तर का अध्ययन
- सोशल मीडिया की विशेषताएँ एवं दुष्प्रभाव

सहायक ग्रंथ –

1. मीडिया समग्र खंड, जगदीश्वर चतुर्वेदी
2. मीडिया के सामाजिक सरोकार, कालूराम परिहार
3. सूचना समाज, अर्माण्ड मैलाड
4. सोशल मीडिया, योगेश पटेल
5. हिंदी का संपूर्ण समाचार पत्र कैसा हो, वेदप्रताप वैदिक
6. मीडिया : भूमण्डलीकरण और समाज, सं. संजय द्विवेदी

प्रष्न पत्र –5. लोक नाट्य परम्परा और हिंदी

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

1. विद्यार्थी लोक के स्वरूप को जान सकेंगे।
2. लोकनाट्य और लोक रंगमंच क्या है– यह जान सकेंगे।
3. अभिनय की विशिष्टताओं को जान सकेंगे।
4. हिंदी भाषा और उसकी उपभाषाओं (बोलियों) का क्षेत्र विस्तार जान सकेंगे।
5. बोलियों के सामर्थ्य को जान सकेंगे।
6. इस पाठ द्वारा विद्यार्थी अपने ज्ञान और अनुभव से भावी हिंदी रंगमंच को समर्थ और सार्थक बनाने में सक्षम होंगे।
7. यह पाठ अर्थोपार्जन की दृष्टि से भी उन्हें समर्थ बनायेगा।

प्रस्तावित संरचना–

- भारतीय संस्कृति : अवधारणा
- लोक का अर्थ, लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति
- लोक नाट्य, लोक रंगमंच एवं आभिजात्य या भाषायी रंगमंच का स्वरूप
- हिंदी क्षेत्र के लोकनाट्य रूप

1. धार्मिक लोक नाट्य रूप– रामलीला, रासलीला
2. सामाजिक लोक नाट्य रूप – नौटंकी, भांड, माच, नाचा, ख्याल, स्वांग आदि।

- अन्य भारतीय लोक नाट्यों का सामान्य परिचय– यात्रा, भवई, यक्षगान, कुचिपुड़ी, कुडियाट्टम, पागलवेशम, अंकिया आदि।
- भारतीय राष्ट्रीय संस्कृति के निर्माण में लोकनाट्यों की भूमिका।

सहायक ग्रंथ :

1. परंपराशील नाट्य, जगदीश चंद्र माथुर, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नयी दिल्ली
2. लोकधर्मी नाट्य परंपरा, श्याम परमार
3. संगीत : एक लोकनाट्य परंपरा, डॉ. रामनारायण अग्रवाल
4. संगीत के विविध आयाम, डॉ. वीरेंद्र कुमार चंद्रराखी
5. लोक नाट्य परंपरा और प्रवृत्तियाँ, डॉ. महेंद्र भानावत
6. लोक : परंपरा, पहचान एवं प्रवाह, श्याम सुंदर दुबे
7. नाट्यकाव्यालोचन के सिद्धांत, सिद्धनाथ कुमार
8. नाट्यशास्त्र और रंगमंच, दीनानाथ साहनी
9. हिंदी नाटक उद्भव व विकास, दशरथ ओझा
10. संस्कृति के चार अध्याय, रामधारी सिंह, दिनकर

प्रष्न पत्र – 6. राष्ट्रीय चेतना और हिंदी रंगमंच

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

1. विद्यार्थी राष्ट्र, राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय चेतना को जान सकेंगे।
2. रंगमंच क्या है और हिंदी रंगमंच की राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में क्या भूमिका रही है, जान संकेगे।
3. इस पाठ से विद्यार्थियों को अपने पूर्वजों के राष्ट्रप्रेम और उनमें निहित राष्ट्रीय चेतना का ज्ञान हो सकेगा।
4. विद्यार्थी इस पाठ के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में स्वयं की भूमिका का चयन करने में समर्थ हो सकेंगे।
5. जिनमें सृजनात्मक क्षमता होगी वे नयी रचनाओं यथा कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि का निर्माण कर सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना–

- राष्ट्र, राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय चेतना का अर्थ और अर्थवत्ता
- भारतीय प्राचीन वाड्.मय और आधुनिक भारतीय और पाश्चात्य साहित्य में राष्ट्र और राष्ट्रीय चेतना संबंधी दृष्टि
- रंगमंच की अवधारणा – भारतीय एवं पाश्चात्य
- हिंदी रंगमंच की विकास यात्रा
- आधुनिक हिंदी रंगमंच पर राष्ट्रीय चेतना सम्पन्न नाट्य प्रस्तुतियों का अध्ययन

  क. भारतेंदु कालीन हिंदी नाटक एवं रंगमंच

  ख. प्रसाद युगीन हिंदी नाटक एवं रंगमंच

  ग. आधुनिक–समकालीन हिंदी नाटक एवं रंगमंच

सहायक ग्रंथ –

1. रंगमंच, बलवंत गार्गी
2. अंतरंग बहिरंग, देवेंद्र राज अंकुर
3. नाट्य विमर्श, मोहन राकेश
4. नाट्य समीक्षा, डॉ. दशरथ ओझा
5. रंगदर्शन, नेमिचंद्र जैन
6. रंगमंच और नाटक की भूमिका, डॉ. लक्ष्मीनाराण
7. समकालीन हिंदी रंगमंच और रंगभाषा, डॉ. आशीष त्रिपाठी

प्रष्न पत्र – 7. पर्यटन और साहित्य

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

1. विद्यार्थी पर्यटन के बारे में जान सकेंगे।
2. ऐतिहासिक–सांस्कृतिक और प्राचीनतम शिक्षण संस्थाओं के बारे में जान सकेंगे।
3. प्राचीन एवं अर्वाचीन वाणिज्यिक और व्यावसायिक केंद्रों के बारे में जान सकेंगे।
4. समुद्री क्षेत्र, प्रसिद्ध नदियों, मंदिरों, राष्ट्रीय महत्व के उद्यानों, वैज्ञानिक संस्थानों के बारे में जान सकेंगे।
5. महान साहित्यकारों के जन्म स्थलों, कर्मस्थलों आदि के बारे में जान सकेंगे।
6. प्राप्त ज्ञान का उपयोग आजीविका की दृष्टि से कर सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना–

- पर्यटन का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप
- पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण विश्व के देश
- भारत में पर्यटन के महत्वपूर्ण स्थल
- पर्यटन के देशी–विदेशी यात्री
- पर्यटन में चिह्नित साहित्यिक स्थल जहाँ भारतीय एवं विशेषरूप से हिंदी साहित्य के निर्माताओं का कार्यस्थल रहे हैं।
- पर्यटन की दृष्टि से प्रकाशित प्रमुख पत्र–पत्रिकाएँ आदि।

सहायक ग्रंथ–

1. यात्रा साहित्य विधा : शास्त्र और इतिहास, बापू राव देसाई

2. पर्यटन सिद्धांत और प्रबंधनः षिवस्वरूप सहाय

3. भारत में पर्यटनः राजेष कुमार व्यास

विषय केंद्रित निम्नांकित प्रश्नपत्रों में से कोई चार

प्रष्न पत्र – 1. लोक साहित्य

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

- विद्यार्थी वर्तमान वैश्वीकरण के युग में अपने अंचल विशेष के प्रभावी रूप से लेकर वैश्विक संदर्भ से जुड़ सकेंगे।
- विद्यार्थियों को लोक साहित्य की भाव गंभीरता,सांस्कृतिक रूप और सहज अभिव्यक्ति का परिचय प्राप्त हो सकेगा।

प्रस्तावित संरचना –

- लोक साहित्य : परिभाषा और स्वरूप
- लोक साहित्य संकलन : उद्देष्य, पद्धतियॉ, समस्याएँ और समाधान
- लोक साहित्य के लोक तत्व
- लोककथा का स्वरूप और महत्व
- लोक गीत का स्वरूप और महत्व
- लोक नाट्य परंपरा : नौटंकी
- लोक साहित्य में नैतिकता और प्रेम संदर्भ

सहायक ग्रंथ –

1. भरत के लोक नाट्य, शिवकुमार माथुर
2. लोकधर्मी नाट्य परंपरा, श्याम परमार
3. लोक साहित्य की भूमिका, कृष्णदेव उपाध्याय
4. लोक साहित्य की भूमिका, रामनरेष त्रिपाठी
5. लोक संस्कृति, वसन्त निरगुणे

6. लोक साहित्य का अवगमन, त्रिलोचन पाण्डेय
7. लोकगीत की सत्ता, सुरेश गौतम
8. भारतीय लोक साहित्य की रूपरेखा, दुर्गाभागवत
9. लोकजीवन के कलात्मक आयाम, कालूराम परिहार
10. लोक साहित्य सिद्धांत और प्रयोग, श्रीराम शर्मा
11. हिंदी साहित्य का वृहद इतिहास, कृष्णदेव उपाध्याय
12. लोक साहित्य विज्ञान, डॉ सत्येंद्र

प्रष्न पत्र – 2. प्रवासी साहित्य

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

- विद्यार्थियों को समृद्ध करने में विदेश में रहने वाले भारतीय प्रवासी साहित्यकारों की भूमिका का ज्ञान प्राप्त होगा।
- विद्यार्थी प्रवासी साहित्य से भली भाँति परिचित हो सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना –

- प्रवासी साहित्य :उद्भव और विकास
- गिरमिटिया हिंदी भाषा और साहित्य का स्वरूप
- प्रवासीहिंदी कवियों की हिदी विकास में भूमिका
- प्रवासी कहानीकारों की हिंदी विकास में भूमिका
- प्रवासीहिंदी उपन्यासकारों की हिंदी विकास में भूमिका
- प्रमुख प्रवासी साहित्यकारों का परिचय और उनका हिंदी साहित्य के विकास में योगदान –प्रो. हरिशंकर 'आदेश', अभिमन्यु अनत, दिव्या माथुर, तेजेंद्र शर्मा, उषाराजे सक्सेना, डॉ. पद्मेश गुप्त, अचला शर्मा, अर्चना पैन्यूली आदि।

सहायक ग्रंथ–

1. प्रवासी भारतीय हिंदी साहित्य, ंसं. विमलेश कांति वर्मा
2. प्रवासी हिंदी साहित्य : दशा और दिशा, प्रो. प्रदीप श्रीधर
3. प्रवासी हिंदी साहित्य : विविध आयाम, डॉ. रमा
4. हिंदी का प्रवासी साहित्य, डॉ. कमलकिशोर गोयनका
5. प्रवासी लेखन : नई जमीन, नयाँ आसमान, अनिल जोशी
6. प्रवासी भारतीयों में हिंदी की कहानियाँ, डॉ. सुरेंद्र गंभीर
7. प्रवासी श्रम इतिहास, धनंजय सिंह

8. प्रवास में, डॉ. उषाराजे सक्सेना

9. प्रवासी साहित्यकार मूल्यांकन, श्रृंखला–1, तेजेंद्र शर्मा, सं. डॉ. रमा, महेंद्र प्रजापति

10. प्रवासी साहित्य : भाव और विचार, संध्या गर्ग

11. हिंदी प्रवासी साहित्य (गद्य साहित्य), डॉ. कमलकिशोर गोयनका

12. प्रवासी की कलम से, बादल सरकार

प्रष्न पत्र – 3. भारतीय साहित्य

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

- प्रत्येक साहित्य की अपनी विशेषताएँ होती हैं। इस दृष्टि से भारत की विभिन्न भाषाओं का अध्ययन कर सकेंगे।
- भारत बहुभाषा भाषी देश है किंतु भारत के विभिन्न संस्कृतियों में एक प्रकार की सूत्रबद्धता है। इस प्रश्नपत्र के अध्ययन से विद्यार्थी उससे परिचित हो सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना –

- भारतीय साहित्य का स्वरूप
- भारतीय साहित्य अध्ययन की समस्याएं
- भारतीय साहित्य में मानव मूल्य
- भारतीय साहित्य में संस्कृति का प्रेरक स्वरूप
- भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिंब

सहायक ग्रंथ–

1. आज का भारतीय साहित्य, अनुवाद : प्रभाकर माचवे
2. भारतीय साहित्य, रामछबीला त्रिपाठी
3. भारतीय साहित्य, मूलचंद गौतम
4. भारतीय साहित्य अध्ययन की नई दिशाएँ, प्रदीप श्रीधर
5. भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास, डॉ. नगेंद्र
6. भारतीय साहित्य की अवधारणा, राजेंद्र मिश्र
7. भारतीय साहित्य की पहचान, सं. सियाराम तिवारी
8. भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ, रामविलास शर्मा
9. भारतीय साहित्य, सं. नगेंद्र

10. भारतीय साहित्य, भोला शंकर व्यास

प्रष्न पत्र – 4. स्थानीय भाषा के साहित्य का देवनागरी लिपि में अध्ययन

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

- विद्यार्थी किसी भी एक भाषा जैसे बंगला, मराठी, पंजाबी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम आदि में से एक के साहित्य से परिचित हो सकेंगे।
- वे किसी एक भारतीय भाषा के इतिहास को भी जान सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना

स्थानीयता के आधार पर संस्थाएँ अपना पाठ्यक्रम तय करेंगी।

सहायक ग्रंथ–

1. कन्नड़ साहित्य का इतिहास, एस. मुगली (अनु. सिद्धगोपाल)
2. तमिल साहित्य : एक झांगी, एम. शेषन
3. बांग्ला साहित्य का इतिहास, सुकुमार सेन
4. भारतीय साहित्य, सं. नगेंद्र
5. मराठी साहित्य के इतिहास की समस्याएँ, रामविलास शर्मा
6. भारतीय साहित्य की पहचान, सं. सियाराम तिवारी
7. भारतीय साहित्य अध्ययन की नई दिशाएँ, प्रदीप श्रीधर
8. भारतीय साहित्य, भोलाशंकर व्यास

प्रष्न पत्र – 5. हिंदी में अनूदित विश्व साहित्य– अलबेयर कामू, चेखव, शेक्सपियर , विलियम वर्डस्वर्थ

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

- विद्यार्थी हिंदी साहित्य को समृद्ध करनेवाले अनूदित साहित्य का ज्ञान अर्जित कर सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना –

- विश्व साहित्य अध्ययन का उद्देश्य और महत्त्व
- विश्व साहित्य अध्ययन में अनुवाद की भूमिका
- साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन की प्रविधि और महत्त्व
- प्रमुख हिंदी अनुवादकों के कार्य की समीक्षा– आलबेयर कामू , चेखव, शेक्सपियर, विलियम वर्डस्वर्थ आदि।

सहायक ग्रंथ–

1. विश्व भाषा हिंदी की अस्मिता : स्वप्न और यथार्थ, जी. गोपीनाथन
2. विश्व भाषा हिंदी, महावीरसरन जैन
3. विश्व भाषा रचना, कमल किशोर गोयनका
4. हिंदी का वैश्विक परिदृश्य, सं. गिरीश्वर मिश्र
5. हिंदी कैसे बने विश्व भाषा, वेदप्रताप वैदिक

प्रष्न पत्र –6. बाल साहित्य

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

- विद्यार्थी बाल साहित्य की रचना प्रक्रिया से परिचित हो सकेंगे।
- वे बालोपयोगी साहित्य की भाषा से रूबरू होंगे।
- उनका बाल साहित्य से परिचय संभव हो सकेगा।

प्रस्तावित संरचना –

- बाल साहित्य : परिभाषा और स्वरूप
- बाल साहित्य सृजन की शास्त्रीय कसौटी
- बाल साहित्य के पाठक : बाल–उम्र के आधार पर वर्गीकरण
- बाल साहित्य का विधा (कहानी,गीत,नाटक आदि) के आधार पर वर्गीकरण
- बाल साहित्य में चित्र कथा की भूमिका
- बाल साहित्य में व्यक्तित्व निर्माण की भावना
- प्रमुख बाल साहित्यकारों जैसे– निरंकार देव सेवक, श्यामनारायण पाण्डेय, डॉ. श्रीप्रसाद, हरिकृष्ण देवसरे, राष्ट्रबंधु आदि के बाल साहित्य का परिचय।

सहायक ग्रंथ–

1. भारतीय बाल साहित्य का इतिहास, जयप्रकाश भारती
2. हिंदी बाल साहित्य विमर्श, डॉ. शकुंतला कालरा
3. हिंदी बाल काव्य के विविध पक्ष, विनोद चंद्र पाण्डेय 'विनोद'
4. हिंदी काबलकाव्य एक अविराम यात्रा, विनोद चंद्र पाण्डेय 'विनोद'
5. बाल साहित्य इक्कीसवीं सदी में, जयप्रकाश भारती
6. बाल साहित्य रचना और समीक्षा, डॉ. हरिकृष्ण देवसरे
7. बाल साहित्य की अवधारणा, डॉ. श्रीप्रसाद

8. बाल साहित्य की रूपरेखा, डॉ. श्रीप्रसाद

9. बाल साहित्य का इतिहास, निरंकार देव

10. त्रिधारा, त्रिसंध्या, त्रिपथगा, सं. डॉ. मधु पंत

प्रष्न पत्र –7. राष्ट्रीय चेतना की कविता

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

- हिंदी साहित्य में एक लंबे समय से राष्ट्रीय चेतना की कविता सृजन होता रहा है। इस गौरवपूर्ण साहित्य का अध्ययन संभव होगा।

प्रस्तावित संरचना–

- राष्ट्रीय चेतना : परिभाषा और स्वरूप
- राष्ट्रीय चेतना की कविता का तात्विक विवेचन
- राष्ट्रीय चेतना की कविता में देश प्रेम के विविध आयाम
- हिंदी साहित्य के विविध युगों में राष्ट्रीय चेतना का विकास
- हिंदी साहित्य की राष्ट्रीय चेतना के प्रमुख कवि : भारतेंदु हरिश्चंद्र, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध',मैथिलीशरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान, रामनरेश त्रिपाठी, जयशंकर प्रसाद आदि।

सहायक ग्रंथ–

1. अतीत के हंस : मैथिलीशरण गुप्त, प्रभाकर श्रोत्रिय
2. जयशंकर प्रसाद, नंददुलारे वाजपेयी
3. भारतेंदु हरिश्चंद्र, रामविलास शर्मा
4. पंत, प्रसाद और मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह दिनकर
5. हरिऔध और उनका साहित्य, मुकुंददेव शर्मा
6. रामनरेश त्रिपाठी, इंदरराज वैद 'अधीर'
7. राष्ट्रीय नवजागरण और साहित्य, वीरभारत तलवार

प्रष्न पत्र –8. सृजनात्मक लेखन

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

- साहित्य सृजन भी एक कला है। सृजन के विविध स्वरूपों का ज्ञान विद्यार्थियों के लिये जीवनोपयोगी होगा।

प्रस्तावित संरचना –

- सृजनात्मक लेखन : परिभाषा, स्वरूप
- कहानी लेखन : तत्व एवं लेखन प्रविधि
- काव्य लेखन : तत्व एवं लेखन प्रविधि
- लघुकथा लेखन : तत्व और लेखन प्रविधि
- उपन्यास लेखन : तत्व और लेखन प्रविधि
- एकांकी/ नाटक/ प्रहसन आदि लेखन : तत्व और लेखन प्रविधि

सहायक ग्रंथ–

1. रचनात्मक लेखन, सं. रमेश गौतम
2. रचनात्मक लेखन, हरीश अरोड़ा, अनिल कुमार सिंह
3. सृजनात्मक लेखन, राजेंद्र मिश्र
4. संचार भाषा हिंदी, सूर्यप्रसाद दीक्षित

प्रष्न पत्र –9. राजभाषा हिंदी

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

- भारतीय संविधान में हिंदी को राजभाषा का गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। विद्यार्थी को संविधान के 343 से 351 तक के अनुच्छेदों में संकेतित हिंदी प्रयोग की व्यवस्था का ज्ञान प्राप्त होगा।

प्रस्तावित संरचना –

- हिंदी भाषा के विविध रूप : बोली,भाषा, राजभाषा, राष्ट्र भाषा, संपर्क भाषा, माध्यम भाषा आदि
- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 43 से 45 में व्यवस्थित हिंदी की स्थिति
- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 49 से 51 में व्यवस्थित हिंदी की स्थिति और प्रयोग व्यवस्था
- हिंदी के संदर्भ में राष्ट्रपति के आदेशों की समीक्षा
- वर्तमान समय में राजभाषा हिंदी की स्थिति और अपेक्षा

सहायक ग्रंथ–

1. कामकाजी हिंदी, कैलाश चंद्र भाटिया
2. कार्यालयी हिंदी, विजयपाल सिंह
3. प्रशासन में राजभाषा हिंदी, कैलाशचंद्र भाटिया
4. मानक हिंदी का स्वरूप, भोलानाथ तिवारी
5. राजभाषा के संदर्भ में हिंदी आंदोलन का इतिहास, उदयनारायण दुबे
6. राजभाषा प्रबंधन, गोवर्धन ठाकुर
7. हिंदी : उद्‌भव विकास और रूप, हरदेव बाहरी
8. हिंदी व्याकरण, कामता प्रसाद गुरू
9. हिंदी शब्दानुशासन, किशोरीदास वाजपेयी
10. राजभाषा हिंदी : विवेचना और प्रयुक्ति, किशोर वासवानी

हिंदी कौशल –संवर्धन ऐच्छिक पाठयक्रम (HSEC)

(कोई दोः क और ख वर्ग में से एक–एक का चयन)

(क) प्रष्न पत्र –1. लेखन कौशल

प्रष्न पत्र –2. भाषा शिक्षण कौशल

प्रष्न पत्र –3. अनुवाद कौशल (हिंदी से अंग्रेजी , अंग्रेजी से हिंदी)

प्रष्न पत्र –4. कम्प्यूटर अनुप्रयोग

(ख) प्रष्न पत्र –1. कार्यालयी हिंदी

प्रष्न पत्र –2. विज्ञापन और समाचार लेखन

प्रष्न पत्र –3. मीडिया के लिए साक्षात्कार

(क)

प्रष्न पत्र –1. लेखन कौशल

पाठयक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा

- विद्यार्थियों में भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता विकसित हो सकेगी।
- व्याकरण की दृष्टि से वे सही वाक्य लिख सकेंगे।
- विद्यार्थी लेखन कला सीख सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना

- लेखन कौशल का महत्व
- लेखन के विविध रूप
- लेखन प्रशिक्षण
- लेखन कौशल के विकास के लिए क्रियाकलाप

सहायक ग्रंथ–

1. रचनात्मक लेखन, रमेश गौतम
2. हिंदी वाक्य विन्यास, सुधा कश्यप
3. संचार भाषा हिंदी, सूर्यप्रसाद दीक्षित

प्रष्न पत्र –2 भाषा शिक्षण कौशल

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

- विद्यार्थी भाषा सीखने की सृजनात्मक प्रक्रिया कोसमझ सकेंगे।
- भाषा की बारीकियों को समझ सकेंगे।
- भविष्य में हिंदी शिक्षण में अच्छे शिक्षक बन सकेंगे।
- भाषायी दक्षता अर्जित करके फ़िल्मों में डबिंग, हिंदीगीत लेखन, जैसे क्षेत्रों में कार्य कर सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना –

- भाषा शिक्षण कौशल के उद्देश्य
- भाषा शिक्षण कौशल के सोपान – श्रवण, भाषण,पठन, लेखन
- भाषा शिक्षण की विधियॉ –मौखिक, वार्तालाप विधि, संरचनात्मक विधि, द्विभाषिक शिक्षण विधि आदि।
- भाषा शिक्षण में उपयोगी सामग्री

सहायक ग्रंथ–

- रचना की प्रक्रिया, स्तानिस्लावस्की
- भाषा शिक्षण, रवींद्रनाथ श्रीवास्तव
- हिंदी भाषा शिक्षण, भोलानाथ तिवारी
- हिंदी भाषा : संरचना के विविध आयाम, रवींद्रनाथ श्रीवास्तव
- हिंदी भाषा की रूप संरचना, भोलानाथ तिवारी
- हिंदी शिक्षण : अंर्तराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य, सतीश कुमार, सूरजभान सिंह
- हिंदी, प्रयोजनमूलक हिंदी और अनुवाद, पूरनचंद्र टंडन

प्रष्न पत्र–3. अनुवादकौशल

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

- अनुवाद की प्रयोजनीयता और प्रक्रिया की समझविकसित होगी।
- उनमें अच्छे अनुवादक बनने की इच्छा जागृत हो सकेगी।

प्रस्तावित संरचना

- अनुवाद का अर्थ, स्वरूप और क्षेत्र
- भाषाशिक्षण और अनुवाद
- अनुवाद की प्रयोजनीयता
- अनुवाद प्रक्रिया के तीन चरण –विश्लेषण, अंतरण एवं पुनर्गठन

सहायक ग्रंथः

- अनुवाद विज्ञान और संप्रेषण – डॉ. हरिमोहन
- अंग्रेज़ी –हिंदी अनुवाद व्याकरण –सूरजभान सिंह
- व्यावहारिक अनुवाद–एन ई विश्वनाथ अय्यर

प्रष्न पत्र 4–कंप्यूटर अनुप्रयोग

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

- विद्यार्थी कंप्यूटर पर देवनागरी लिपि मे टाइप करना सीख सकेंगे।
- हिंदी में वेब पेज बनाना सीख सकेंगे।
- हिंदी में ई मेल पर संदेष भेजना सीख सकेंगे।
- डेस्कटॉप पग्लिषिंग की जानकारी और अन्य फॉट
- हिंदी साफ्टवेयर का परिचय
- ऑनलाइन पत्र पत्रिकाओं की जानकारी

प्रस्तावित संरचना

- कम्प्यूटर पर देवनागरी
- ईमेल
- हिंदी में वेबपेज
- कला के विभिन्न क्षेत्रों में कम्प्यूटर का प्रयोग

सहायक ग्रंथ :

- कम्प्यूटर और हिंदी– डॉ हरिमोहन
- कम्प्यूटर परिचालन तत्व – रामबंसल 'विज्ञाचार्य'
- कंप्यूटर सूचना प्रणाली का विकास – राम बंसल

(ख)

प्रष्नपत्र –1 कार्यालयी हिंदी

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

- छात्र कार्यालयी हिंदी के स्वरुप से परिचित होकर कार्यालय में हिंदी के प्रयोग में सक्षम हो सकेंगे।
- ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाली पारिभाषिक शब्दावली का ज्ञान उनके हिंदी कौशल संवर्द्धन में सहायक होगा ।

प्रस्तावित संरचना–

- कार्यालयी हिंदी का स्वरुप
- कार्यालयी हिंदी का क्षेत्र
- कार्यालयी पत्राचार के विविध रुप
- कार्यालयी हिंदी की समस्याएँ
- कार्यालयी हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली

सहायक ग्रंथ–

- प्रयोजनमूलक भाषा और कार्यालयी हिंदी–कृष्ण कुमार गोस्वामी
- प्रयोजनमूलक हिंदी– माधव सोनटक्के
- प्रयोजनमूलक हिंदी की नई भूमिका–कैलाशनाथ पाण्डेय

प्रश्नपत्र 2– विज्ञापन और समाचार लेखन

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

- विज्ञापन लेखन के प्रति उनकी अभिरुचि विकसित होगी। मीडिया उद्योग में वे अच्छे कॉपी लेखक बन सकेंगे।
- समाचार लेखन में अभिरुचि विकसित होगी । रोज़गार की दृष्टि से मीडिया के क्षेत्र में संभावनाएँ बढ़ेंगी।
- छात्र मीडिया के लिए महत्वपूर्ण व्यक्तियों के साक्षात्कार लेने में सक्षम हो सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना–

- विज्ञापन की परिभाषा और स्वरूप
- विज्ञापन के उद्देश्य
- विज्ञापन माध्यम
- विज्ञापन लेखन : विज्ञापन कॉपी लेखन,विज्ञापन कॉपी के अंग ,कॉपी लेखक के गुण
- समाचार की परिभाषा और स्वरुप
- समाचार के विभिन्न स्रोत
- समाचार संकलन
- समाचार लेखन

सहायक ग्रंथ–

- जनसम्पर्क प्रचार एवं विज्ञापन –विजय कुलश्रेष्ठ
- हिंदी पत्रकारिता – डॉ कृष्ण बिहारी मिश्र

प्रश्नपत्र 3– मीडिया के लिए साक्षात्कार (इण्टरव्यू अथवा भेंटवार्ता)

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

- विद्यार्थी साक्षात्कार लेने की कला से परिचित होंगे
- वे भेटवार्ताओं के बारे में भी जान सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना –

- मीडिया में साक्षात्कार का महत्व
- मीडिया में साक्षात्कार के प्रकार
- मीडिया में साक्षात्कार प्रविधि
- एक अच्छे साक्षात्कार कर्त्ता के गुण

सहायक ग्रंथ–

- इलैक्ट्रॉनिक मीडिया–टी.डी.एस आलोक
- अनुसंधान प्रविधि, सिद्धांत और प्रक्रिया– एस.एन.गणेषन

परिषिष्ट

परिशिष्ट : बीज शब्द

रासो

निर्गुण भक्ति

सगुण भक्ति

प्रेमाख्यान

राष्ट्रीय चेतना

वैश्वीकरण

कल्पना

फैंटेसी

प्रवासी भारतीय

अभिव्यंजनावाद

विज्ञापन

साक्षात्कार

राजभाषा

आलोचना

उत्तर आधुनिकता

आख्यान

इतिहास दृष्टि

प्रगतिशील चेतना

रंग स्थापत्य

अनुकरण

त्रासदी

उदात्त

स्वच्छंदतावाद

बिम्ब

फीचर

समाचार

न्यू मीडिया

सोशल मीडिया

कार्यालयी हिंदी

पटकथा

पर्यटन

लोकनाट्य

भारतीय संस्कृति

बेव पेज

साक्षात्कार

प्रयोजनमूलक हिंदी

समाचार

लोकमंच

भाषाई मंच

आभिजात्य रंगमंच

तलिका– 1 स्नातक प्रतिष्ठा कोर कोर्स 14

कार्यक्रम अधिगम परिणाम	हिंदी साहित्यः आदिकाल से पूर्व मध्यकाल	हिंदी साहित्यः उत्तर मध्यकाल	हिंदी साहित्यः भारतेंदु युग से छायावादी कविता तक	हिंदी साहित्यः प्रगतिवाद से 20वीं शताब्दी तक	कथा साहित्यः कहनी व उपन्यास	हिंदी नाट्य साहित्य	कथेतर गद्य साहित्य	हिंदी गद्य साहित्य का इतिहास	हिंदी आलोचना	हिंदी भाषा और भाषा विज्ञान	भारतीय काव्यशास्त्र	पश्चात्य काव्यशास्त्र	मीडिया के विविध आयाम	प्रयोजनमूलक हिंदी				
जीवन और साहित्य के मूल्य की समझ	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓						
साहित्य के इतिहास का व्यवस्थित ज्ञान	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓										
साहित्य के सिद्वांतों का ज्ञान									✓		✓	✓						
साहित्यिक पाठ का मूल्यांकन					✓	✓	✓							✓				
आलोचनात्मक विश्लेषणात्मक क्षमता का विकास	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓							
भाषा के विभिन्न क्षेत्रों की समझ	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓				
व्यवहारिक जीवन में सृजनात्मक और आलोचनात्मक ज्ञान का समावेश					✓	✓	✓			✓			✓	✓				
स्नातकोत्तर के बाद जीविकोपार्जन के क्षेत्र एवं	✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓			✓	✓				

संभावनाएं																	
भारतीय भाषाओं एवं संस्कृति के प्रति जागरूकता	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓					✓	✓			
✓ समाजिक परिप्रेक्ष्य में साहित्यिक आंदोलनों का ज्ञान	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓								
अभिव्यक्ति के विभिन्न कौशलों का विकास	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓			

कार्यक्रम अधिगम परिणाम	तलिका 1 (बी) हिंदी सामान्य (generic) आत्मिक पाठयक्रम (HGEC)																
	सृजनात्म लेखन	पटकथा तथा संवाद लेखन	साहित्य और सिनेमा	सोशल मीडिया और हिंदी	लोक नाट्य परम्परा और हिंदी	राष्ट्रीय चेतना और हिंदी रंगमंच	पर्यटन और साहित्य	लोक साहित्य	प्रवासी साहित्य	भारतीय साहित्य	स्थानीय भाषा के साहित्य का देवनागरी लिपि में अध्ययन	हिंदी में अनूदित विश्व साहित्य	बाल साहित्य					
सृजनात्मक क्षमता का विकास	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓					
अभिव्यक्ति कौशल का विकास	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓					
व्यावसायिक क्षमता का विकास	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓					
सोशल मीडिया का व्यावसायिक उपयोग	✓		✓	✓	✓													
सोशल मीडिया का सामाजिक हित उपयोग	✓	✓	✓	✓	✓		✓		✓	✓			✓					
हिंदी सिनेमा के इतिहास का ज्ञान	✓	✓	✓															
संवाद लेखन क्षमता का विकास	✓	✓	✓		✓	✓												
राष्ट्रीय महत्व के स्थल							✓											
भारत की सांस्कृतिक विरासत से परिचय			✓		✓	✓	✓		✓	✓								
स्नातक के बाद रोजगार के क्षेत्र और संभावना	✓	✓	✓			✓	✓											

कार्यक्रम अधिगम परिणाम	तालिका 1 (c) HGEC विषय केन्द्रित कोई चार																	
	लोक साहित्य	प्रवासी साहित्य	भारतीय साहित्य	स्थानीय भाषा के साहित्य का देवनागरी लिपि में अध्ययन	हिंदी में अनूदित विश्व साहित्य	बाल साहित्य	राष्ट्रीय चेतना की कविता	सृजनात्मक लेखन	राजभाषा हिंदी									
अभिनय की विशिष्टताओं का ज्ञान	✓		✓	✓				✓										
हिंदी भाषा और उसकी भाषाओं का क्षेत्र विस्तार		✓	✓	✓			✓		✓									
भारतीय राष्ट्रीय संस्कृति का निर्माण	✓	✓	✓				✓											
अनुदित साहित्य का ज्ञान			✓	✓	✓		✓		✓									
साहित्य के मानवीय मूल्य	✓	✓	✓		✓	✓	✓											
प्रवासी साहित्य और भारतीय संस्कृति		✓	✓		✓													
साहित्य और व्यक्तित्व निर्माण	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓									
देश प्रेम और राष्ट्रीय चेतना	✓	✓	✓															
स्नातक के बाद रोजगार के क्षेत्र और संभावना	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓									

तालिका **2 हिंदी कौशल–संवर्धन ऐच्छिक पाठ्यक्रम (HSEC)**										
कार्यक्रम अधिगम परिणाम	**SKILL BASED COURSES**									
	लेखन कौशल	भाषा शिक्षण कौशल	अनुवाद कौशल (हिंदी से अंग्रेजी, अंग्रेजी से हिंदी)	कम्प्यूटर अुप्रयोग	कार्यालयी हिंदी	विज्ञापन और समाचार लेखन	मीडिया के लिए साक्षात्कार			
Academic Competence (1.1 to 1.8)										
संप्रेषण क्षमता का विकास	✓	✓	✓			✓	✓			
व्यावसायिक क्षमता का विकास	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓			
अनुवाद कौषल			✓		✓	✓				
कम्प्यूटर का ज्ञान				✓						
विज्ञापन निर्माण की दक्षता	✓					✓				
अभिव्यक्ति कौशल का विकास	✓	✓	✓		✓	✓	✓			
द्विभाषिक संप्रेषण		✓								
स्नातक के बाद रोजगार के क्षेत्र और संभावना	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓			

परिणाम आधारित पाठ्यक्रम रूपरेखा (LOCF) हिन्दी के विशेषज्ञ हिन्दी के सदस्य

प्रो० कुलदीप चंद अग्निहोत्री, कुलपति, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश – 176 215

प्रो० आनंद वर्धन शर्मा, उप कुलसचिव, महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स वर्धा – 442 005

प्रो० (श्रीमती) मंजुला राणा, प्रोफेसर एवं मुख्य, हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हरिनिवास, अमरकुंज, श्रीनगर, गढ़वाल – 246 174

प्रो० चंदन कुमार, डीआरएस हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली – 110 007

प्रो० (श्रीमती) कुमुद शर्मा, डीआरएस हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली – 110 007

आमंत्रित सदस्यः–

प्रो० नरेंद्र मिश्र

प्रो० वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी